maryammonthly.in

OCT 2020 - 30:00

मरयम

अपनों का साथ, हर दुख का इलाज

लग्ज़री लाइफ़ स्टाइल

वेस्ट का इस्लामोफ़ोबिया

अरबईन वॉक

युनिटी वीक

इजाज़ा

मरयम मैग्ज़ीन को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए इसको लागत से आधी क़ीमत पर रीडर्स को दिया जाता है जिसकी वजह से इदारे को आप सभी लोगों की फ़ाइनेंशल मदद की सख़्त ज़रूरत है।

हमारी कोशिश है कि इस मैग्ज़ीन के ज़रिए दीनी मालूमात को बेहतरीन क्वालिटी में आप सभी लोगों तक पहुंचाया जाता रहे।

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

LUCKNOW-INDIA

इजाज़ा आयतुल्लाह सीस्तानी

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

P.O.Box No.:27 Chowk Lucknow UP-India

इजाज़ा आयतुल्लाह ख़ामेनई

जो लोग अहले सुन्नत और शियों में दूरियाँ बढ़ाना चाहते हैं वह न सुन्नी हैं और न शिया। इन्हें सिरे से इस्लाम से ही कोई सरोकार नहीं है क्योंकि अगर किसी का इस्लाम पर ईमान होगा तो वह ऐसे मामलों को छेड़ेगा ही नहीं जिनसे आपसी मतभेद जन्म लेते हों जबकि यह वह दौर है जिसमें हमें मुस्लिम युनिटी की बहुत सख़्त ज़रूरत है क्योंकि इसी से हम कामयाब हो सकता हैं।

अगर कोई ऐसा कर रहा है तो कहीं न कहीं उसके तार बाहर से ज़रूर जुड़े हुए हैं।

दुनिया की बड़ी ताक़तें समझ गई हैं कि उन्हें पीछे ढकेलने वाला बस इस्लाम, मुस्लिम युनिटी और मुसलमानों के सारे फ़िरक़ों में आपसी मेल-जोल ही है, इससे हटकर और कुछ नहीं।

इसीलिए दुश्मन की सारी कोशिशि बस यह है कि किसी तरह मुसलमानों को तितर-बितर कर दिया जाए और एक न होने दिया जाए।

RNI No: UPHIN/2012/43577 Monthly Magazine

मरयम

Vol:9 | Issue: 08 | Oct, 2020

इस महीने आप पढ़ेंगी...

लग्ज़री लाइफ़ स्टाइल	6
ख़ुदा आदिल है	8
कुछ काम की बातें	10
करबला के दो बूढ़े शेर	13
वेस्ट का इस्लामोफ़ोबिया	15
माँ–बाप और परवरिश	17
जुहैर बिन क़ैन	19
इमाम हसन[अ] का लश्कर क्यों बिखर गया था?	22
हज़रत असकरी[अ] अपने शियों से क्या चाहते हैं	24
अरबईन वॉक	26
अल्लाह के रसूल[स] की कुछ बातें	28
सूरए कौसर	32
अपनों का साथ, हर दुख का इलाज	35
युनिटी वीक क्यों मनाया जाता है?	37
ज़िन्दा इन्सानों के नाम	39
शरई अहकाम	41

Chief Editor
S. Mohd. Hasan Naqvi

Editorial Board
Nazar Abbas Rizvi
Mohd. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi
Imtiyaz Abbas Rizwan

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Mohammad Aqeel Zaidi

Distribution Manager
Baqir Hasan Zaidi

Contributors
Sajjad Haider Safavi
M. Husain Zaidi

Graphic Designer
Siraj Abidi
98390 99435
imagine graphix

Typist
S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामन्दी हो, यह ज़रूरी नही है। 'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कार्रवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले संपादक से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कॉन्टेन्ट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कार्रवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद हम किसी भी तरह की पूछताछ और कार्रवाई पर जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक 'मरयम' के लिये आने वाले कॉन्टेंट्स में ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi
printed at Swastika Prinwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and
published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003

MARYAM A/C: 55930 10102 41444 **Union Bank of India**
Tahseenganj Branch (Unity Branch) Lucknow **IFSC: UBIN0555932**

सब्क्रिप्शन के लिए चेक/ड्राफ़्ट पर सिर्फ़ **MARYAM** लिखिए।
चेक, ड्राफ़्ट और मनी आर्डर इस पते पर भेजिए:
Mohd. Hasan Naqvi, 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 99566 20017, email: maryammonthly@gmail.com

Head Office: Imambada Ghufranmab, Chowk Mandi, Lucknow
Registered Office: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

एक बहुत ज़रूरी काम यह भी है कि ऐसा कोई भी लिट्रेचर पब्लिश न किया जाए
जिससे आपस में इख़्तिलाफ़ और मतभेद जन्म लेते हों,
यह काम शियों को भी करना है और अहले सुन्नत को भी।

(सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई)

■ अफ़रोज़ इनायत

लग्ज़री लाइफ़ स्टाइल

बहूः (सास से) ''अम्मी मुझे दो दिन के बाद जॉब ज्वाइन करना है।''

सासः (नई नवेली दुलहन को ताज्जुब से देखते हुए) ''जॉब... मगर बेटा... क्यों ?''

बहूः ''मैंने दस-बारह दिन पहले अप्लाई किया था, ऑन लाइन इंटरव्यु हुआ, अब कम्पनी की तरफ़ से लेटर आ गया है कि मैं परसों से ज्वाइन कर लूँ।''

सासः ''इसकी क्या ज़रूरत है ? मेरा मतलब है कि... कुछ टाइम बाद कर लेना।''

बहूः ''अम्मी! मुझे जॉब का कोई शौक़ नहीं है, लेकिन वह... मार्केट में नया मोबाइल आया है, एक लाख से ज़्यादा क़ीमत है उसकी, मुझे बड़ा शौक़ है उसे ख़रीदने का... बस कुछ महीने जॉब करूँगी, पैसे इकट्ठा हो गये तो छोड़ दूँगी।''

सास बेचारी बहू की बात का क्या जवाब देती! वह तो इन्तेज़ार कर रही थी कि घर में बहू आ जाए तो मैं अपना ऑप्रेशन करवा लूँ, बहू घर को संभाल लेगी लेकिन बहू तो अपनी ख़्वाहिशें पूरा करने में लगी हुई थी, और उसकी ख़्वाहिश भी ऐसी थी जो उसकी ज़रूरत थी।

अनअमः (शौहर से) ''बच्चे-वच्चे तो बाद में भी हो सकते हैं, मैं चाहती है कि पहले हम एक बड़ा सा घर बनाएं, हम दोनों मिलकर अपनी सेलरी में से बहुत बचत कर सकते हैं जिस से हमारा नया घर आराम से बन सकता है।''

अहमदः ''शाज़िया बात को और हालात को समझने की कोशिश करो। क्या इस वक़्त ज़रूरी है कि तुम यह सोने के कंगन बनवाओ! वैसे भी तुम्हारे भाई की शादी है, कपड़ों वग़ैरा की तैयारी... यह सब कैसे हो पाएगा! मेरा मानना है कि इस वक़्त यह कोई ख़ास ज़रूरी चीज़ नहीं है कि मैं आफ़िस से क़र्ज़ लेकर तुम्हारी यह ज़रूरत पूरी करूँ।''

इस तरह की मिसालें हमें अपने चारों तरफ़ नज़र आती रहती हैं। मामला यह है कि हम ने उन चीज़ों को अपने ऊपर सवार कर लिया है जो हमारे लिए ज़रूरी हैं ही नहीं। यह ऐसी चीज़ें हैं जिनके बिना भी हमारी ज़िन्दगी आसानी से कट सकती है क्योंकि यह चीज़ें ज़रूरत नहीं बल्कि लग्ज़री लाइफ़ में आती हैं।

इस तरह की बातें आपके आसपास भी होती रहती होंगी। इन लग्ज़री चीज़ों को हम ने आज इस तरह अपनी असली ज़रूरतों में मिला लिया है कि जैसे इनके बिना हम जी ही नहीं सकते। यह चीज़ें हमारे दिल और दिमाग़ पर इस तरह सवार हो गई हैं कि हम इनको पाने और अपनाने के लिए हर तरह की मुश्किलों का सामना भी करने के लिए तैयार हो जाते हैं। ऐसी ही ख़्वाहिशों और ज़रूरतों को पूरा करने के लिए इन्सान हर हद से भी गुज़र जाता है।

आज हमारे समाज में ग़लत-सलत रास्तों से पैसे कमाने का रिवाज इन ज़रूरतों को पूरा करने की वजह से ही बढ़ता जा रहा है। जब हलाल रास्तों से इन ''ज़रूरतों'' को पूरा न किया जा सके तो इन्सान ग़लत रास्तों पर चल पड़ता है। इस तरह शैतान की चालें कामयाब हो जाती हैं कि इन्सान आख़िर मेरी पकड़ में आ ही गया। अगर इंसान जायज़ कमाई से भी इन लग्ज़री चीज़ों या फिर ''ज़रूरतों'' को पूरा करना चाहे तो भी उसके लिए और उसके आसपास के लिए बहुत सारी परेशानियाँ खड़ी हो

सकती हैं, जैसा कि ऊपर की तीनों मिसालों से भी समझ में आ रहा है।

एक औरत ने बताया कि घर में लिमिटेड आमदनी होने की वजह से हम लोग एक पुरानी गाड़ी से ही काम चला रहे हैं लेकिन मेरा बेटा कहता है कि मुझे शर्म आती है अपने दोस्तों के सामने, मैं यह गाड़ी इस्तेमाल नहीं करूँगा, मुझे नई गाड़ी चाहिए।

इन लग्ज़री और ग़ैर ज़रूरी चीज़ों की माँग इसलिए भी बढ़ती जा रही है कि हमारे आसपास यही सब कुछ हो रहा है। इसमें देखा-देखी का बहुत बड़ा रोल है। एक इन्सान जब कुछ करता है तो उसे देख कर दूसरा उस से दो हाथ आगे बढ़ जाने के बारे में सोचने लगता है।

एक दोस्त ने एक लाख का मोबाइल ख़रीदा तो दूसरा उस से महंगा मोबाइल ख़रीदने का प्लान बनाने लगता है। इस देखा-देखी और रेस में हम ने इन लग्ज़री और ग़ैर ज़रूरी चीज़ों को इस तरह अपने ऊपर सवार कर लिया है जैसे यही हमारी सबसे बड़ी ज़रूरत हैं, इनके बिना हम जी ही नहीं सकते। वैसे इस में भी कोई शक नहीं है कि इन में से कुछ चीज़ें बहरहाल आज की ज़रूरतों और आज के लाइफ़-स्टाइल में भी शामिल हैं जैसे मोबाइल, गाड़ी वग़ैरा... लेकिन ''रोज़ नये से नये'' की तलाश ने इस ज़रूरत को ''ख़ुदा'' बना दिया है।

इसी तरह शादी-ब्याह में बहुत सारी रस्मों को ही ले लीजिए जिन्हें देख कर यूँ लगता है कि जैसे यह सब हमारी ज़िन्दगी के ऐसे अटूट बंधन हैं जिन्हें अंदेखा करने पर हमें इस समाज से निकाल दिया जाएगा। जबकि देखा जाए तो न जाने कितनी रस्में ऐसी हैं कि उनके बग़ैर भी शादी-ब्याह की दीनी ड्युटी बड़ी आसानी से पूरी की जा सकती है, बल्कि ''सादगी'' में ही बरकत है जिसे हम सब भुला चुके हैं।

जब धीरे-धीरे यह चीज़ें हमारी ज़िन्दगी का ज़रूरी हिस्सा बन कर हम पर सवार हो जाती हैं तो फिर आगे चलकर यही चीज़ें एक ''नशे'' की तरह हमें अपने जाल में फंसा लेती हैं, जिसके बाद हमारी ज़िन्दगी अधूरी सी और मुश्किल हो जाती है।

जैसे मोबाइल... किसी नौजवान से एक दिन उसका मोबाइल दूर करके देखिए, उसे यूँ लगेगा जैसे उसकी ज़िन्दगी अधूरी हो गई है... बेकार और बे-मज़ा ज़िन्दगी, रूखी-फीकी ज़िन्दगी... असल में यही ''शैतानी फन्दा'' है जिसमें आज हर एक जकड़ा हुआ है, लेकिन जो अपने दिल पर कंट्रोल पा लेते हैं, जो नफ़्स के ग़ुलाम नहीं बल्कि नफ़्स उनके क़ाबू में है, वह लोग इन चीज़ों को ख़ुद पर सवार नहीं होने देते। अल्लाह के ऐसे ही बन्दे ''कामयाबी'' पाने वाले हैं जो अल्लाह की नेमतों से फ़ायदा भी उठाते हैं और इन सारे झंझटों से दूर रहकर आराम भरी ज़िंदगी भी बिताते हैं। बैलेंस और ज़रूरत के हिसाब से चीज़ों को इस्तेमाल करने से इस्लाम ने हमें कहीं नहीं रोका है।

अल्लाह के हुक्म और अल्लाह के रसूल[ﷺ] की हदीसों के हिसाब से ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरा करना हमारी भलाई के लिए ज़रूरी है। एक घर जिस में ज़िन्दगी की सभी ज़रूरतें हों वह हमारी ज़िन्दगी के लिए काफ़ी है, इसके होते हुए ऐसे किसी बड़े महल की चाहत करना जो दुनिया भर की डेकोरेशन से सजा हो, जिसे देख कर लोगों की आँखें फटी की फटी रह जाएं, दिल को अच्छा तो लग सकता है लेकिन इस से इंसान की आराम से चलती-फिरती ज़िंदगी दूभर हो जाएगी क्योंकि वह अपनी आमदनी से कहीं बढ़कर अपनी ज़िंदगी को चमकदार बनाना चाह रहा होगा।

इस्लाम ने हमें ऐसी ख़्वाहिशों को कंट्रोल करने के लिए अपने नफ़्स और अपने दिल पर क़ाबू पाने का हुक्म दिया है ताकि हम इन लग्ज़री चीज़ों के पीछे अपनी आराम भरी ज़िन्दगी को बर्बाद न करें क्योंकि अल्लाह ने यह ज़िन्दगी ''इस दुनिया की ज़िन्दगी'' को सजाने-संवारने के लिए नहीं दी है बल्कि आख़िरत की ज़िन्दगी को संवारने के लिए दी है। जबकि यह लग्ज़री चीज़ें हमें आख़िरत की ज़िन्दगी से दूर कर देती हैं। एक ज़रूरत को पूरा करने के बाद हमारा दिल और हमारा नफ़्स अगली ज़रूरत को हमारी बड़ी ज़रूरतों के खाते में डाल कर हमें उलझाए रहता है। इस तरह बन्दा अपने रब से दूर होकर शैतान का ग़ुलाम बन कर रह जाता है।

इसलिए इन ''ग़ैर ज़रूरी या लग्ज़री ज़रूरतों'' को अपने लिए अहम मत जानिये और इन्हें अपने ऊपर सवार मत होने दीजिए। यही चीज़ अपने बच्चों को भी सिखाईये, ताकि वह भी इन चीज़ों के नशे से ख़ुद को बचाकर रख सकें।

अगर आप एक अच्छी बीवी की तरह अपना रोल निभाना चाहती हैं और एक अच्छी फ़ैमिली बनाना चाहती हैं तो आप को लग्ज़री लाइफ़ के ख़्वाबों से छुटकारा पाना होगा और यह नशा अपने सर से उतारना होगा। जो कुछ अल्लाह ने आप दोनों को दिया है उस पर सब्र कीजिए।

अल्लाह के साथ-साथ अपने शौहर का भी शुक्रिया अदा करती रहिए। ●

ख़ुदा आदिल है (1)

■ आयतुल्लाह जाफ़र सुबहानी

सभी मुसलमान ख़ुदा को आदिल (अद्ल या इंसाफ़ करने वाला) मानते हैं और अद्ल (इंसाफ़) ख़ुदा की एक बहुत बड़ी सिफ़त है। इसका सुबूत यह है कि क़ुरआन करीम ने साफ़-साफ़ एलान कर दिया है कि ख़ुदा के यहाँ किसी भी तरह का ज़ुल्म नहीं पाया जाता है। साथ ही क़ुरआन ने ख़ुदा को दुनिया में अद्ल व इंसाफ़ करने वाला भी बताया है।

जैसा कि क़ुरआन में हैः

''अल्लाह किसी पर ज़र्रा (कण) बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता।''[1]

और यह भी हैः

''अल्लाह इन्सानों पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता।''[2]

इसी तरह यह भी हैः

''अल्लाह ख़ुद गवाह है कि उसके अलावा किसी की इबादत नहीं की जा सकती। फ़रिश्ते और इल्म रखने वाले गवाह हैं कि वह अद्ल करने वाला है।''[3]

क़ुरआन की इन आयतों के अलावा इन्सान की अक़्ल भी इस बात की गवाही देती है कि ख़ुदा आदिल है, क्योंकि अद्ल एक अच्छाई व कमाल है और ज़ुल्म एक बुराई व ऐब है। इन्सान की अक़्ल इस बात को भी समझती है कि ख़ुदा के अन्दर हर कमाल पाया जाता है और उसके अन्दर किसी तरह का कोई ऐब या कमी नहीं है।

कोई किसी पर ज़ुल्म क्यों करता है ?

हर ज़ुल्म के पीछे कोई न कोई वजह ज़रूर होती है जैसेः

1- ज़ुल्म करने वाले को पता नहीं होता है कि यह एक बुरी चीज़ है।

2- या वह जानता तो है कि यह बुरी चीज़ है लेकिन ख़ुद को इस बुराई से रोक नहीं पाता। इसके बाद वह अद्ल व इंसाफ़ नहीं कर पाता या ज़ुल्म को मजबूरी और अपने लिए ज़रूरी समझता है।

3- वह ज़ुल्म को बुरा तो समझता है और अद्ल व इंसाफ़ भी कर सकता है लेकिन एक नादान इन्सान है इसलिए बेवक़ूफ़ी की वजह से ज़ुल्म कर बैठता है।

ख़ुदा के अन्दर इन तीनों में से कोई बात नहीं पाई जाती यानी वह न जाहिल है, न मजबूर है और न ही नादान। इसलिए ख़ुदा की तरफ़ ज़ुल्म को जोड़ा ही नहीं जा सकता बल्कि उसका हर काम अद्ल और हिकमत के मुताबिक़ होता है।

शेख़ सदूक़ अपनी किताब में लिखते हैंः एक यहूदी ने अल्लाह के रसूल[स०] से कुछ सवाल पूछे जिनमें से एक सवाल ख़ुदा के अद्ल के बारे में भी था। अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमायाः ख़ुदा कभी ज़ुल्म नहीं करता बल्कि वह हमेशा अद्ल व इंसाफ़ करता है क्योंकि वह जानता है कि ज़ुल्म बुरा है और वह ज़ुल्म करने पर मजबूर भी नहीं है।

कामों के अच्छे या बुरे होने की कसौटी

अल्लाह के अद्ल के मामले में मुसलमानों के बीच कोई इख़्तेलाफ़ (डिफ़्रेंस) नहीं पाया जाता यानी सभी ख़ुदा को आदिल मानते हैं लेकिन इतना ज़रूर है कि अद्ल की तफ़सीर के बारे में कुछ इख़्तेलाफ़ पाया जाता हैः

1- कुछ कहते हैंः इन्सान की अक़्ल किसी भी काम के अच्छे या बुरे होने को समझती है। इंसान की अक़्ल अच्छे काम को उसके करने वाले के कमाल की निशानी और बुरे काम को उसके करने वाले की बुराई की निशानी समझती है। ख़ुदा हर अच्छाई और कमाल का सोर्स है, इसलिए उसका हर काम अच्छा है और उसके किसी काम में भी बुराई और ऐब नहीं पाया जाता है।

यहाँ इस बात की तरफ़ इशारा करना भी ज़रूरी है कि अक़्ल ख़ुदा के आदिल होने को साबित नहीं करती बल्कि ख़ुदा का आदिल होना हर हाल में साबित है क्योंकि अक़्ल के लिए यह बात बिल्कुल आसान सी और सामने की है कि ख़ुदा हर कमाल और अच्छाई का सोर्स है, अक़्ल का काम यह समझना है कि ख़ुदा के किस काम में क्या हिकमत पाई जाती है, इसलिए अक़्ल हम से कहती है कि अल्लाह इन्सान के साथ हमेशा अद्ल और हिकमत का बर्ताव करेगा।

इस्लामी थियालोजी में कहा जाता हैः ''अक़्ल हर काम के अच्छे या बुरे होने को समझती है।'' और इस थ्योरी के मानने वालों को ''अद्लिया'' कहा जाता है।

शिया उलमा इसी नज़रिये को मानते हैं।

2- इसके मुक़ाबले में दूसरी थ्योरी यह पाई जाती है कि इन्सान की अक़्ल कामों के अच्छे या बुरे होने को बिल्कुल नहीं समझ सकती और कामों के अच्छे या बुरे होने और उसे समझने की कसौटी दीन या शरीअत है यानी ख़ुदा जिस काम को करने का हुक्म दे दे वह अच्छा है और जिस काम से रोक दे वह बुरा है।

इस थ्योरी की बुनियाद पर अगर ख़ुदा किसी अच्छे इन्सान को जहन्नम में भेज दे या किसी बुरे इन्सान को जन्नत में भेज दे तो ऐसा बिल्कुल हो सकता है और इस काम में कोई बुराई नहीं है क्योंकि ख़ुदा जो भी कर दे वही अच्छा काम है। इन लोगों का कहना है कि हम सिर्फ़ इस वजह से ख़ुदा को आदिल मानते हैं क्योंकि क़ुरआन और दीन ने उसे आदिल कहा है।

अक़्ल कैसे अच्छे-बुरे को समझती है ?

हमारे बहुत से अक़ीदों की बुनियाद यही थ्योरी है कि अक़्ल कामों के अच्छे या बुरे होने को ख़ूब समझती है। इसलिए इस थ्योरी को साबित करने के लिए हम यहाँ दो दलीलें पेश कर रहे हैंः

1- एक इन्सान चाहे वह किसी भी धर्म और मज़हब का मानने वाला हो, दुनिया के किसी मुल्क, क़ौम और ज़बान से जुड़ा हुआ हो वह इस बात को अच्छी तरह समझता है कि अद्ल और इंसाफ़ एक अच्छी चीज़ है और ज़ुल्म बुरी चीज़ है या वह वादा निभाने को अच्छा और वादा पूरा न करने को बुरा समझता है। इसी तरह वह यह भी समझता है कि नेकी का बदला नेकी के साथ देना अच्छा है और नेकी के बदले किसी के साथ बुराई करना बुरी चीज़ है।

अगर हम इन्सानी हिस्ट्री की स्टडी करें तो हमें कोई इन्सान ऐसा नहीं मिलेगा जो इन बातों को न समझता हो या अक़्ल रखते हुए इन बातों का इनकार करता हो।

2- अगर हम यह मान भी लें कि अक़्ल कामों के अच्छे या बुरे होने को बिल्कुल नहीं समझ सकती और किसी भी काम के अच्छे या बुरे होने की समझ सिर्फ़ दीन या शरीअत के ज़रिये ही मिल सकती है, तो फिर हमें यह भी मानना पड़ेगा कि इस बात को साबित ही नहीं किया जा सकता कि शरीअत ही किसी काम के अच्छे या बुरे होने का हुक्म दे सकती है। जैसे अगर शरीअत एक काम को अच्छा और दूसरे काम को बुरा कहती है तो हम उस वक़्त तक उस काम के अच्छे या बुरे होने पर यक़ीन नहीं कर सकते जब तक उसके झूठ होने की गुन्जाइश पाई जाती हो। फिर यह गुन्जाइश उसी वक़्त ख़त्म हो सकती है जब हमारे लिए यह साबित हो चुका हो कि ख़ुदा के यहाँ झूठ पाया ही नहीं जाता और इस बात को सिर्फ़ अक़्ल के ज़रिये ही साबित किया जा सकता है।

इसके अलावा हम क़ुरआन करीम की बहुत सी आयतों से भी यह समझ सकते हैं कि इन्सान की अक़्ल बहुत से कामों के अच्छे या बुरे होने को समझ सकती है। इसी लिए हम देखते हैं कि क़ुरआन करीम बहुत सी आयतों में इन्सान की अक़्ल और उसके ज़मीर को सोचने, समझने और फ़ैसला करने का हुक्म देता है जैसे फ़रमाता हैः

''क्या हम इताअत करने वालों और जुर्म करने वालों को बराबर बना दें ? तुम्हें क्या हो गया है, यह कैसे फ़ैसले कर रहे हो ?''[4]

या फ़रमाता हैः

''क्या एहसान का बदला एहसान के अलावा कुछ और भी हो सकता है ?''[5]

इस आयत में हम से एक सवाल किया जा रहा है जिसका जवाब देना हमारे लिए ज़रूरी है। क़ुरआन करीम फ़रमाता हैः ?

''उस से पूछताछ करने वाला कोई नहीं है और वह हर एक का हिसाब लेने वाला है।''[6]

इस आयत की बुनियाद पर ख़ुदा जो भी करता है उसके बारे में उस से कुछ नहीं पूछा जा सकता।

अगर मान लिया जाए कि ख़ुदा कोई ऐसा काम करता है जो अक़्ल के हिसाब से सही नहीं है तो क्या उस से पूछताछ की जाएगी ? इसका जवाब है ''नहीं'' क्योंकि अक़्ल कहती है कि ख़ुदा ''हकीम'' है यानी उसके हर काम के पीछे कोई हिकमत होती है, इसलिए उसका कोई भी काम बुरा हो ही नहीं सकता यानी जिस काम के पीछे कोई हिकमत हो वह बुरा हो ही नहीं सकता जिसके बाद किसी सवाल की या किसी तरह की पूछताछ की कोई वजह नहीं बनती।

1-सूरए निसा/40, 2-सूरए यूनुस/44, 3-सूरए आले इमरान/18, 4-सूरए क़लम/35-36, 5-सूरए रहमान/60, 6-सूरए अम्बिया/23

कुछ काम की बातें हज़रत अली[अ०] की ज़बानी

■ सज्जाद सफ़वी

– लालच की सवारी

''ख़बरदार लालच की सवारियाँ तेज़ चलने की वजह से बौखला कर तुम्हें हलाक न कर दें।''

इस हदीस में इमाम अली[अ०] इन्सान का ध्यान एक ख़तरनाक अख़्लाक़ी बीमारी या बुराई की तरफ़ मोड़ रहे हैं जिसे ''लालच'' कहा जाता है।

अगर इन्सान इस बीमारी का शिकार हो जाए तो बर्बादी के अलावा कुछ हाथ नहीं आता। इमाम[अ०] इसे एक ऐसे तेज़ दौड़ने वाले घोड़े की तरह बता रहे हैं जो इन्सान को बर्बादी की खाइयों में फेंक देता है।

लालच के बारे में हदीसों में बहुत सी मिसालें दी गई हैं। एक हदीस में इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं:

''लालच शैतानी शराब है जिसे शैतान अपने हाथों से अपने ख़ास-ख़ास साथियों को पिलाता है और जो भी शैतान के हाथों यह शराब पी लेता है वह ख़ुदा के अज़ाब से या उसके पिलाने वाले।''[1] यानी शैतान की उंगली पकड़ लेने से होश में आता है। इसके बाद ऐसे आदमी को हक़ दिखाई नहीं देता, ऐसा इंसान हिदायत से दूर हो जाता है और अल्लाह वालों के साथ बैठना उसे अच्छा नहीं लगता। एक इन्सान के लिए अब इस से बढ़ कर क्या बर्बादी हो सकती है ?

– देने वाला ख़ुदा है

''अगर हो सके कि तुम्हारे और ख़ुदा के बीच कोई न आने पाए तो ऐसा ही करो क्योंकि तुम्हें तुम्हारा हिस्सा हर हाल में मिलने वाला है और अपना नसीब हर हाल में पाने वाले हो और अल्लाह की तरफ़ से थोड़ा भी लोगों के बहुत से ज़्यादा अच्छा होता है। बल्कि सब अल्लाह ही की तरफ़ से होता है।''

यहाँ इमाम अली[अ०] बहुत ही बुनियादी बात की तरफ़ ध्यान दिला रहे हैं कि इन्सान को सिर्फ़ ख़ुद पर भरोसा करना चाहिए और ख़ुदा पर तवक्कुल रखना चाहिए। उसकी उम्मीद और भरोसा ख़ुदा के अलावा किसी पर नहीं होना चाहिए। अपने भरोसे और कोशिश के बाद जो कुछ भी उसे मिलता है वह थोड़ा भी हो तो उस से ज़्यादा अच्छा है जो उसे लोगों की तरफ़ से मदद या ख़ैरात के तौर पर और एहसान जताने के साथ मिलता है। यानी अगर इन्सान अपनी इज़्ज़त, शराफ़त और अपनी पर्सनॉलिटी बचाते हुए कम माल या कम नेमतें पाता है तो यह भी ख़ुदा की नज़र में एक बहुत बड़ी चीज़ है लेकिन अगर इंसान को ज़्यादा माल और ज़्यादा नेमतें मिल रही हों और बदले में उसे अपनी इज़्ज़त और अपनी शराफ़त को दाँव पर लगाना पड़ रहा हो तो ऐसे माल और ऐसी नेमतों का कोई फ़ायदा नहीं है।

इसका मतलब यह नहीं है कि इन्सान अपने कामों में दूसरों से मदद न ले बल्कि मतलब यह है कि ऐसी मदद न माँगे जो इन्सान की इज़्ज़त, शराफ़त और इन्सानी

वैल्यूज़ के ख़िलाफ़ हो। एक आदमी ने ख़ुदा की बारगाह में दुआ कीः

''ऐ ख़ुदा! मुझे अपने बन्दों से किसी भी तरह मदद लेने से बचा ले।''

इमाम बाक़िर[अ०] ने यह दुआ सुनी तो फ़रमाया,

''ऐसा मत कहो बल्कि यह कहो कि ख़ुदाया मुझे बुरे लोगों से मदद लेने से बचा क्योंकि मोमिन अपने मोमिन भाई से मदद लिये बग़ैर रह ही नहीं सकता।''

यह दुनिया काज़ और इफ़ेक्ट की दुनिया है यानी हर चीज़ के पीछे उसकी एक वजह होती है। इसलिए बहुत से कामों का काज़ या उनकी वजह दूसरे इन्सान होते हैं और यह मदद भी हक़ीक़त में ख़ुदा की तरफ़ से ही होती है क्योंकि ख़ुदा ही ने हम इन्सानों को एक-दूसरे की मदद करने का हुक्म दिया है और हमारे अन्दर मदद करने का जज़्बा रखा है।

- ख़ामोशी की भरपाई मुमकिन है

''ख़ामोशी या चुप रहने से पैदा होने वाली कमी की भरपाई कर लेना बोलने से होने वाले नुक़सान की भरपाई से ज़्यादा आसान है। बर्तन के अन्दर का सामान ढक्कन रख कर बचाया जाता है।''

इन्सान के लिए बोलना अच्छा है या चुप रहना? ख़ामोशी का नुक़सान ज़्यादा है या बोलने का?

यह एक बड़ा सवाल है। हदीसों में अपनी ज़बान को कन्ट्रोल में रखने पर बहुत ज़ोर दिया गया है और ख़ामोशी को हिकमत का एक दरवाज़ा बताया गया है। बल्कि कुछ हदीसों में यहाँ तक आया है कि अगर बोलना चाँदी जैसा है तो ख़ामोशी की क़ीमत सोने जैसी है।

बड़े इन्सानों की ज़िंदगी में ख़ामोशी, कम बोलने और ज़बान को कन्ट्रोल में रखने के बारे में बहुत सी बातें देखने को मिलती हैं। नहजुल बलाग़ा में भी इसके बारे में काफ़ी कुछ मिलता है।

एक जगह ''ज़्यादा ख़ामोशी'' को मोमिन की एक निशानी बताया गया है।[2]

दूसरी जगह ऐसे लोगों की तारीफ़ की गई है जो फ़ाल्तू बातों से दूर रहते हैंः

''ख़ुश क़िस्मत है वह आदमी जिसने अपनी लम्बी ज़बान पर क़ाबू पा लिया।''[3]

इसी तरह ख़ामोशी और कम बोलने को अक़्ल के पूरा होने की निशानी भी बताया गया हैः

''जब अक़्ल पूरी हो जाती है तो बातें कम हो जाती हैं।''[4]

ख़ामोशी का एक फ़ायदा इमाम[अ०] ने अपनी इसी वसिय्यत में यह बताया है कि इन्सान ख़ामोशी से होने वाले नुक़सान की तो भरपाई कर सकता है लेकिन ज़बान से होने वाले नुक़सान की भरपाई नहीं कर सकता क्योंकि ज़बान से निकलने वाली बात उस तीर की तरह है जो चलने के बाद वापस नहीं आता।

यह आर्ट, काफ़ी मेहनत के बाद हासिल होती है। यह इन्सान की रूह और इरादे की ताक़त की निशानी है कि वह बग़ैर सोचे-समझे बात न करे, ताकि कच्ची बातों के बुरे रिज़ल्ट से बच सके। इमाम अली[अ०] ने इसे बहुत ख़ूबसूरत मिसाल के ज़रिये समझाया है कि बर्तन के अन्दर जो कुछ है उसे बचाए रखने का तरीक़ा यह है कि उसके मुँह को अच्छी तरह बन्द कर दिया जाए। इन्सान के पास जो कुछ भी है उसका बर्तन उसका दिल और उसकी रूह है जिस पर ज़बान यानी मुँह का ढक्कन रखा हुआ है जिसे इरादे की रस्सी से मज़बूती से बाँधा जा सकता है।

- माल का सही इस्तेमाल

''अपने हाथ की दौलत को संभाल कर रखना दूसरे के हाथ की नेमत पर आंखें जमाने से ज़्यादा अच्छा है। मायूसी की कड़वाहट को बर्दाश्त कर लेना लोगों के सामने हाथ फैलाने से कहीं अच्छा है और पाकीज़गी के साथ मेहनत करना गुनाहों के साथ मालदार होने से कहीं अच्छा है।''

यहाँ इमाम अली[अ०] रिज़्क़ कमाने और नेमतों के इस्तेमाल के लिए तीन बड़ी ही ख़ास बातों की तरफ़ हमारा ध्यान मोड़ रहे हैंः

1- हाथ आई नेमतों को काफ़ी समझना

फ़ाइनेन्स मैनेजमेन्ट का यह एक बहुत ही ख़ास फ़ार्मूला है जिसके बारे में इमाम अली[अ०] ने यहां बात की है। इन्सान के पास जो कुछ माल व दौलत है या जो भी नेमतें हैं उनके इस्तेमाल में अगर सही मैनेजमेन्ट से काम लिया जाए तो वही इंसान के लिए काफ़ी हो जाएंगी और उसकी नज़रें दूसरों के माल की तरफ़ नहीं उठेंगी। साथ ही वह मुश्किलों और परेशानियों का शिकार भी नहीं होगा। अगर इन्सान अपनी ज़रूरतों को पूरा करे, इसराफ़ या फ़िज़ूलख़र्ची से बचे, फ़ाल्तू ख़र्चों को कन्ट्रोल करे, अपनी ख़्वाहिशों की लगाम कसके रखे तो वह अपने पास मौजूद नेमतों से एक अच्छी ज़िन्दगी बिता सकता है। यह फ़ार्मूला इन्सान को जहां लालच से रोकता है, वहीं दूसरों के सामने हाथ फैलाने से भी बचाता है, उसे दुनिया के जाल में गिरफ़्तार होने से भी बचाता है, हराम और मुफ़्त का माल खाने से दूर करता है और बैलेंस के साथ रोज़ी कमाने और नेमतों के इस्तेमाल का तरीक़ा भी सिखाता है।

2- दुनिया के नुक़सान को बर्दाश्त करना

जब इन्सान मेहनत करेगा, अपने हाथ की कमाई खाएगा और जो कुछ उसके पास है उसी को काफ़ी समझेगा तो इसका नतीजा यह होगा कि वह लोगों के माल व दौलत और उनकी नेमतों की तरफ़ नज़रें नहीं उठाएगा। यानी दूसरों से माँगने और उनके सामने हाथ फैलाने का दरवाज़ा अपने लिए बन्द कर लेगा। यूँ तो इन्सान को इस काम से नुक़सान भी हो सकता है और उसे बहुत से दुनियावी फ़ायदों से हाथ भी धोना पड़ सकता है जिसे इमाम अली[अ०] ''महरूमी की कड़वाहट'' कहते हैं लेकिन इसके बदले में जो इज़्ज़त, शराफ़त और बज़ुर्गी उसे अल्लाह के यहां से नसीब होगी उसकी मिठास उस कड़वाहट से कहीं ज़्यादा अच्छी होगी।

इसी लिए इमाम अली फ़रमाते हैं, ''मायूसी की कड़वाहट को बर्दाश्त करना लोगों के सामने हाथ फैलाने से बेहतर है।''

यह बात हदीसों में कई बार इस्तेमाल हुई है जैसे इमाम बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं,

''बेहतरीन माल ख़ुदा पर भरोसा और लोगों के माल से ख़ुद को नाउम्मीद करना है।''[5]

3- पाक और हलाल रास्ता अपनाना

रिज़्क़ कमाने के लिए इन्सान सही रास्ता भी अपना सकता है और ग़लत भी। हलाल तरीक़ा भी इस्तेमाल कर सकता है और हराम भी। हो सकता है कि हराम रास्ते से इन्सान ज़्यादा से ज़्यादा माल व दौलत कमाले और ग़लत तरीक़ा अपनाने में उसे बहुत से फ़ायदे मिल जाएं जो सही तरीक़ा अपनाने में न मिल सकें लेकिन सवाल यह है कि क्या ज़्यादा माल व दौलत कमाने के लिए इन्सान ग़लत रास्तों को चुन सकता है? क्या ग़लत रास्तों को अपनाना अक़्ल व शरीअत के हिसाब से सही है? क्या इस काम से ख़ुदा राज़ी होगा? क्या इमाम अली ख़ुश होंगे?

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''पाकीज़गी के साथ मेहनत करना गुनाहों के साथ दौलत कमाने से बेहतर है।''

हलाल तरीक़े से कमाए हुए माल में बरकत भी ज़्यादा होती है, सुकून भी ज़्यादा होता है और इसका असर भी बहुत अच्छा होता है। साथ ही आख़िरत में भी कामयाबी हाथ आती है। जबकि हराम रास्ते से हाथ आने वाले माल में न बरकत होती है, न सुकून होता है, न ख़ुदा व अहलेबैत[अ०] की ख़ुशी होती है और न आख़िरत की कामयाबी।

फिर अक़लमन्दी और समझदारी क्या है?

कुछ दिनों की दुनिया की ख़ुशी को पा लेना अच्छा है या आख़िरत की हमेशा की कामयाबी को पाना?

1-बिहारुल अनवार, 70/169 ह-6, 2-कलमाते क़िसार/333, 3-कलमाते क़िसार/123, 4-कलमाते क़िसार/71, 5-अत-तहज़ीब, 6/378 ह-273

■ परवेज़ अमीनी

करबला के दो बूढ़े शेर

उसमान, बद्र की जंग के बहादुर सिपाहियों में से थे। उन्होंने रसूले इस्लाम[स०] के चचा जनाबे हमज़ा के साथ मिलकर मुश्रिकों से जंग की थी। वह बड़े सब्र और मारेफ़त वाले इन्सान थे।

उनकी उम्र 72 साल थी लेकिन अभी भी जवानों की तरह किसी भी जंग में लड़ने की ताक़त रखते थे। वह जंगे सिफ़्फ़ीन में इमाम हुसैन इब्ने अली[अ०] के साथ-साथ थे। रसूले अकरम[स०] के घर वाले उनका बड़ा एहतेराम करते थे।

उसमान कूफ़े में जनाबे मुस्लिम के वफ़ादार साथियों में थे। कूफ़े आते ही मुस्लिम बिन अक़ील बनू उमैय्या की हुकूमत के ख़िलाफ़ एक बड़े मूवमेन्ट के लिए हालात बनाने में लग गये थे।

जब मुस्लिम हानी के घर चले गए थे तो वहाँ जो मीटिंगें हुआ करती थीं उनमें उसमान भी आया करते थे जिसकी वजह से वह भी बनू उमैय्या की हुकूमत के मुख़ालिफ़ों में आगे-आगे नज़र आने लगे थे।

उधर कूफ़े के हालात एक दम से बदल गए थे और मुस्लिम कूफ़े वालों के रंग बदलने पर हैरान रह गये थे। मूवमेन्ट के लीडर या तो गिरफ़्तार हो गये थे या क़त्ल कर दिये गये थे।

कूफ़े वालों की धोखे बाज़ी के साथ उमवी हुकूमत का ड्रामा एक नई स्टेज में आ गया था। उसमान के लिए अब कूफ़े में ठहरने की कोई जगह नहीं थी। इब्ने ज़ियाद के जासूस घर-घर उन्हें तलाश कर रहे थे।

उसमान एक रात मौक़ा देख कर कूफ़े के बियाबान में निकल गए थे।

उसमान ज़िरह पहने और हाथ में तलवार लिये लगातार चलते रहे यहाँ तक कि निगाहों से ओझल हो गये। 28 ज़िलहिज्जह की रात का अन्धेरा पूरी तरह छा चुका था। उसमान ने सुबह तक चलते रहने का फ़ैसला किया। वह चूँकि एक बहादुर सिपाही थे और साथ ही सितारों के बारे में काफ़ी कुछ जानते थे, इसलिए रात के अंधेरे में रास्ता ढूँढने में उन्हें कोई मुश्किल नहीं हुई।

72 किलोमीटर पैदल चलना कोई आसान काम नहीं था।

आख़िरकार उसमान पहली मोहर्रम को इमाम हुसैन[अ०] के क़ाफ़िले तक पहुँच ही गये।

इमाम हुसैन[अ०] से मुलाक़ात उनकी सबसे बड़ी चाहत थी। इमाम[अ०] को देखते ही उनका दिल तेज़ी से धड़कने लगा और वहीं ज़मीन पर बैठ गये।

सफ़र की थकन और रातों को जागते रहने से बहुत कमज़ोर हो गए थे।

इमाम[अ०] का क़ाफ़िला ठहर गया था ताकि उसमान आराम कर सकें।

आशूर के दिन इमाम[अ०] के साथी एक-एक करके शहीद होते गये।

अब उसमान के अन्दर इतनी ताक़त नहीं थी कि वह सब कुछ देखते रहें और उमरे साद की फ़ौज के जुल्म के आगे चुपचाप बैठे रहें।

इमाम[अ०] के पास पहुँचे और मैदान में जाने की इजाज़त माँगी।। इमाम[अ०] ने उनके लिए दुआ की और आख़िरी बार उन से गले मिले।

उसमान ने अपनी लम्बी और चमकती हुई तलवार सूरज की रौशनी में हवा में लहराई और घोड़े पर सवार हो गए।

दुश्मन उसमान की बहादुरी के बारे में सब कुछ जानते थे। कुछ सिपाही उसमान को देख कर पीछे हट गये। उमरे साद ने कहा कि मिल कर उसमान पर हमला कर दो।

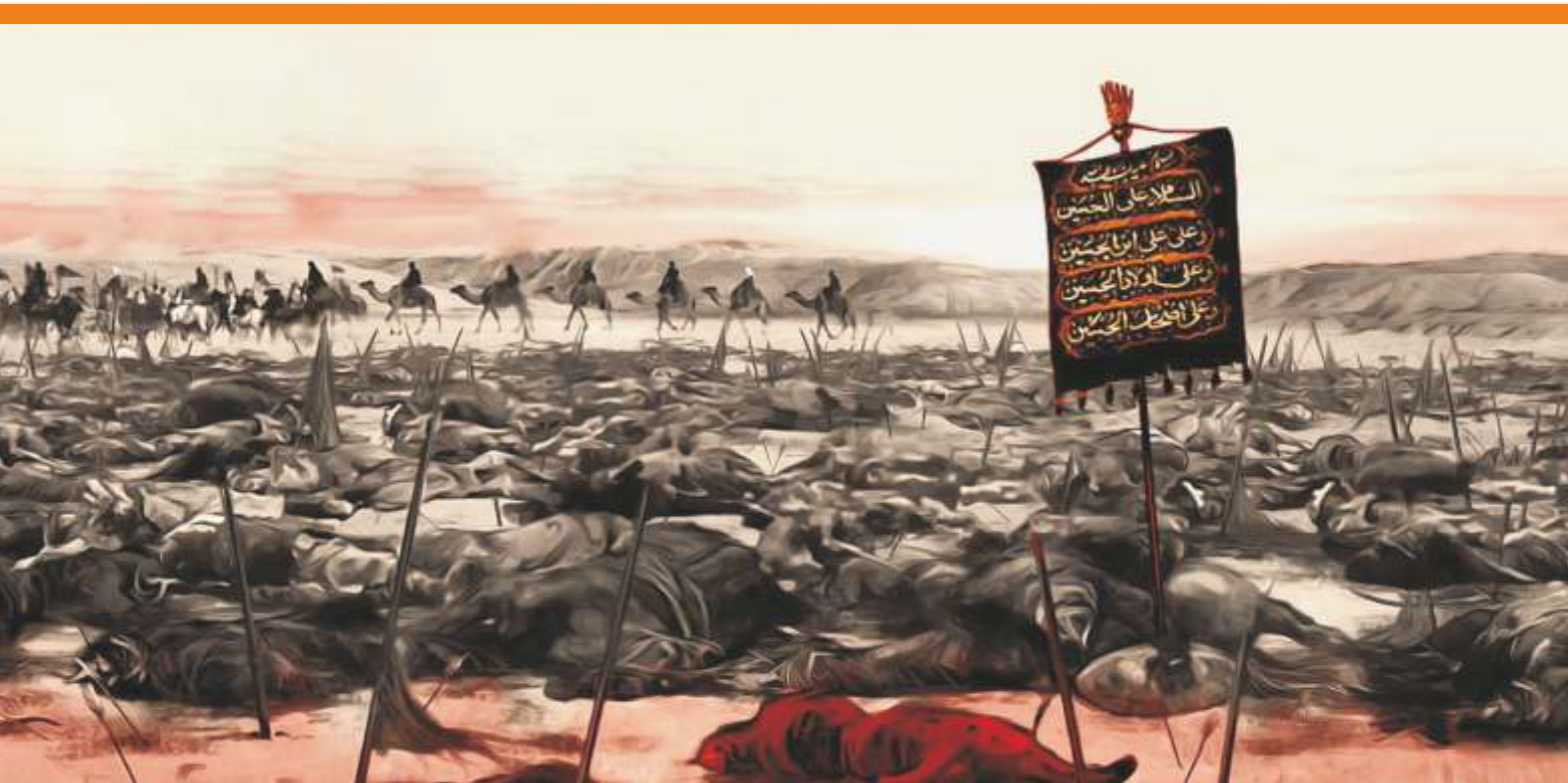

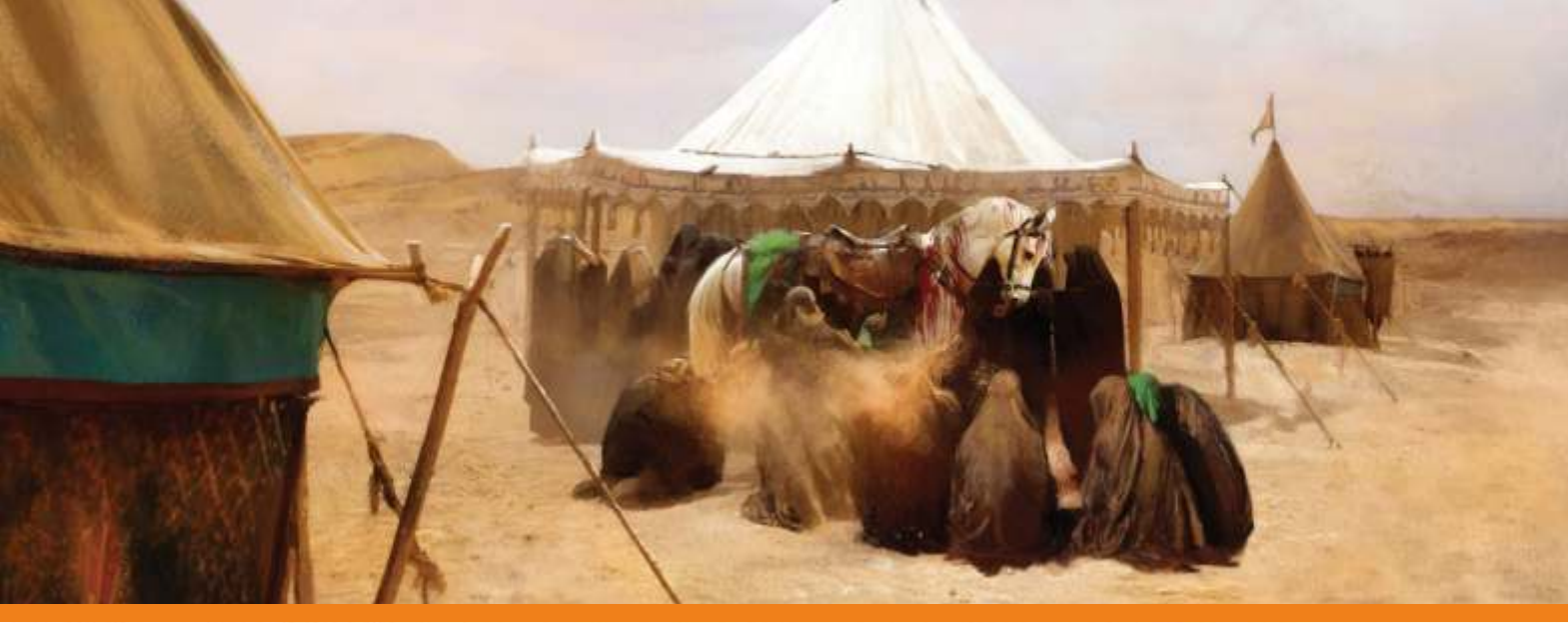

सिपाहियों के हमले से पहले ही उसमान ने उन पर हमला बोल दिया था।

ज़बरदस्त जंग शुरु हो गई थी। सिपाही एक-एक करके ज़मीन पर गिर रहे थे।

जंग शुरु हुए कुछ वक़्त गुज़र गया। आख़िरकार उमरे साद के सिपाहियों के नेज़े काम आए और उसमान ज़मीन पर गिर पड़े।

इमाम[अ०] उसमान के सिरहाने पहुँचे। उसमान के अन्दर अब ताक़त नहीं थी। इमाम[अ०] को देख कर मुस्कुराए और अपने हाथ इमाम[अ०] के चेहरे पर फेरने लगे। इमाम[अ०] ने उन्हें अपनी तरफ़ खींच लिया।

इस तरह बद्र का यह मुजाहिद दस मोहर्रम को उन्हीं दुश्मनों की नस्ल के हाथों शहीद हुआ जिन्हें बद्र में जहन्नम भेजा था।

कूफ़े में तीन दिन तक जंग, जनाबे मुस्लिम की शहादत और इमाम हुसैन[अ०] के साथ कूफ़े वालों की बेवफ़ाई ने अनस को इमाम हुसैन[अ०] तक पहुँचने पर मजबूर कर दिया था। जनाबे मुस्लिम के सभी साथी छुप गये थे और उन्हें एक-दूसरे के हालात की कोई ख़बर नहीं थी। इब्ने ज़ियाद के जासूसों ने शहर का घेराव कर रखा था। अब कोई रास्ता नहीं था और यज़ीद के मुख़ालिफ़ों में लड़ने की ताक़त नहीं थी।

अनस ने फ़ैसला किया कि उबैदुल्लाह इब्ने हुर के साथ मिलकर इब्ने ज़ियाद के आदमियों की आंखों से बच-बचाकर कूफ़े से निकल जाएं।

अनस की उम्र ४० साल थी।

वह जंगे बद्र के बड़े मुजाहिदों में से थे जिन्होंने जनाबे हम्ज़ा और हज़रत अली[अ०] के साथ मिल कर दुश्मनों से जंग लड़ी थी।

वह इमाम हुसैन[अ०] से रसूले अकरम[स०] की मोहब्बत देख चुके थे। यहाँ तक कि उन्होंने रसूले ख़ुदा[स०] से यह भी सुना था: ''मेरा बेटा हुसैन करबला में शहीद होगा। जो भी उस ज़माने में ज़िन्दा रहेगा उस पर वाजिब है कि हुसैन[अ०] की मदद करे।''

वह रसूले अकरम[स०] की हदीसें और हालात लोगों को बताया करते थे। मदीने के बच्चों और इमाम हसन[अ०] व हुसैन[अ०] के साथ रसूले अकरम[स०] के खेलने से लेकर मक्के वालों के साथ उनकी जंगों तक के हालात बताया करते थे।

उबैदुल्लाह इब्ने हुर कूफ़े के सहरा के बारे में अच्छी तरह जानते थे।

रास्ता ज़्यादा लम्बा नहीं था लेकिन टेढ़े-मेढ़े रास्तों का सफ़र किसी इंसान को भी थका सकता था।

अचानक फ़ुरात के पानी की ख़ुश्बू अनस तक पहुँची। शोर-शराबे की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। वह थोड़ा पास पहुँचे। सामने लगे हुए ख़ेमों से निकलती रौशनी पर नज़र पड़ी। अनस ने इमाम[अ०] के ख़ेमों को पहचान लिया। ४ मोहर्रम के चाँद की रौशनी से रात चमक रही थी। अनस हुर के बेटे के साथ बियाबान के एक कोने में बैठ गये। दोनों इमाम[अ०] के साथियों की तरफ़ जाने के लिए मौक़ा ढूँढ रहे थे। अनस चूँकि बूढे थे इसलिए काफ़ी थके हुए नज़र आ रहे थे।

आधी रात गुज़र गई। अनस बड़ी एहतियात से इमाम[अ०] के ख़ेमों तक पहुँचे। पहरा देने वाले लोग आग के पास बैठे थे। अनस और इब्ने हुर क़रीब पहुँचे और सलाम किया। बुरैर इब्ने ख़ुज़ैर ने उन्हें रात के अन्धेरे में भी पहचान लिया। क़रीब आए और उन्हें गले से लगा लिया।

इस्लाम का यह बूढ़ा मुजाहिद यानी अनस इमाम[अ०] के क़ाफ़िले से मिल गया था।

१० मोहर्रम थी और ज़ोहर का वक़्त होने वाला था।

अनस ने अपने माथे पर रुमाल बाँधा ताकि उनकी लम्बी भंवें उनकी आँखों पर न आने पाएं। इसके बाद कमर में पटका बाँधा, तलवार उठाई और इमाम[अ०] के पास आ गए। इमाम[अ०] ने उन्हें गले से लगा लिया।

अनस पैदल ही दुश्मन की तरफ़ बढ़े। वह बूढ़े मुजाहिद थे जिन्होंने जवानी से ही अहलेबैत[अ०] के नाम पर जंगें की थी।

उमरे साद के सिपाही उनके पास पहुँचे और बड़ी भयानक जंग शुरु हो गई। अनस ने पहले सिपाही को बड़ी आसानी से जहन्नम भेज दिया और बढ़कर दूसरे सिपाहियों तक पहुँचे।

बूढ़े मुजाहिद में अब हिम्मत नहीं थी। दुश्मन के दो तीन वार ही उन्हें उनके ख़ुदा तक पहुँचाने के लिए काफ़ी थे।

आख़िरी वक़्त में रसूले अकरम[स०] की वसिय्यत याद आई कि आपने फ़रमाया था, ''मेरा बेटा हुसैन करबला में शहीद होगा। जो भी उस वक़्त ज़िन्दा होगा उस पर वाजिब है कि उसकी मदद करे''।

वह ख़ुश थे कि उन्होंने रसूले अकरम[स०] की वसिय्यत पर अमल किया।

इमाम क़रीब आए और उन्हें अपनी बाँहों में लेकर अपनी उंगलियां अनस के सफ़ेद बालों में फेरीं और उनकी पेशानी को चूमा। तभी अज़ान की आवाज़ आने लगी थी।

वेस्ट का इस्लामोफ़ोबिया

वजह क्या है ?

■ डॉ. अकबर नसरुल्लाही

हाल ही में फ़्रांस की एक मैगज़ीन चार्ली हेब्डो ने एक बार फिर रसूले इस्लाम[स०] की शान में गुस्ताख़ी की है। इस मैगज़ीन ने पाँच साल पहले भी रसूले इस्लाम[अ०] के बहुत अजीब से कार्टून बनाए थे, जिसके ख़िलाफ़ प्रोटेस्ट करने वाले लोगों ने इस मैगज़ीन के आफ़िस पर हमला करके कार्टून बनाने वाले जॉन काबू और कुछ दूसरे लोगों को जान से मार डाला था।

हाल में इस मैगज़ीन ने इस वाक़िए के पाँचवां साल पूरा होने पर ''सब कुछ इसके लिए'' के टाइटिल के साथ एक ख़बर पब्लिश की है और मुसलमानों के आख़िरी रसूल[स०] के कार्टून बनाए हैं।

पाँच साल पहले चार्ली हेब्डो के ऑफ़िस पर हमला काफ़ी ड्रामाई अन्दाज़ में किया गया था। फ़्रांस की पॉलिटिकल पार्टी नेश्नल फ़्रंट के पुराने लीडर जॉन मेरी लोपेन ने उसी वक़्त कह दिया था कि यह हमला वेस्टर्न इंटेलीजेन्स एजेन्सीज़ की तरफ़ से किया गया है।

इस में कोई शक नहीं कि इस तरह के आतंकवादी हमले और मुसलमानों के आख़िरी रसूल के ख़िलाफ़ गुस्ताख़ियों की यह सीरीज़ वेस्ट में इस्लामोफ़ोबिया के मूवमेन्ट से जुड़ी हुई है।

इस्लाम से जुड़ी मुक़द्दस (पवित्र) चीज़ों की बेएहतेरामी या बेइज़्ज़ती, मुसलमानों के इमोशंस को भड़काने और उन्हें बड़े क़दम उठाने पर उभारने की कोशिश एक सोची-समझी प्लॉनिंग के साथ की जाती है, जिसके ज़रिये इन्टरनेश्नल ज़ियोनिज़्म और इस्लाम से दुश्मनी रखने वाली ताक़तें अपने ख़ास पॉलिटिकल मिशन को पूरा करने की कोशिश करती रहती हैं।

इस्लाम से जुड़ी उन चीज़ों और उन हस्तियों की बेएहतेरामी कोई नई चीज़ नहीं है जिस से मुसलमानों का अक़ीदा और जज़्बात जुड़े हुए हैं। सोवियत यूनियन के टूटने के बाद वेस्टर्न दुनिया में लोगों में इस्लाम के बारे में जानने का एक अजीब सा शौक़ व सिलसिला शुरु हो गया था और वेस्ट वाले तेज़ी के साथ मुसलमान होने लगे थे।

इसलिए बहुत सारी वेस्टर्न हुकूमतों ने तेज़ी से फैलने वाली इस्लाम की इस लहर पर कंट्रोल पाने के लिए तभी से इस्लामोफ़ोबिया का सहारा लेने का फ़ैसला कर लिया था। फ़्रांस के अलावा डेनमार्क के कई अख़बारों और मैगज़ीनों में इसी तरह के कार्टून्स छप चुके हैं। इस्लाम की ग़लत-सलत पिक्चर दुनिया को दिखाने वाली तरह-तरह की बहुत सारी फ़िल्में भी बनाई गई हैं। फ़्रेंच मैगज़ीन क्लोज़र और फ़्रांस ही के मैगज़ीन चार्ली हेब्डो में अल्लाह के रसूल[स०] की शान में गुस्ताख़ी करने वाले कई बार छप चुके भद्दे कार्टून इसी इस्लामोफ़ोबिया प्रोजेक्ट की कुछ मिसालें हैं।

वेस्टर्न दुनिया में चल रहे इस्लामोफ़ोबिया का मुक़ाबला करने के लिए कुछ ख़ास बातों की तरफ़ ध्यान देना बहुत ज़रूरी है:

(1) वेस्टर्न वर्ल्ड के नेता बार-बार यह कहते दिखाई पड़ते हैं कि अपने अक़ीदे या अपनी सोच को खुल कर दूसरों के सामने रखने की आज़ादी यानी फ़्रीडम ऑफ़ स्पीच, लिबरल डेमोक्रेसी की बुनियाद है, इसलिए हम फ़्रीडम ऑफ़ स्पीच के क़ानून को बांध नहीं सकते और इसी लिए ऐसे कामों की रोकथाम की ही नहीं जा

सकती जिन्हें कुछ लोग अपने मज़हब और दीन-धर्म की बेएहतेरामी या बेइज़्ज़ती समझते हैं।

दूसरी तरफ़ ऐसी बहुत सी मिसालें ख़ुद वेस्टर्न वर्ल्ड में पाई जाती हैं जो वेस्टर्न लीडर्स के इस दावे को झूठा साबित करने के लिए काफ़ी हैं। जैसे इसी चार्ली हेब्डो मैगज़ीन में काम करने वाले कार्टूनिस्ट मोरेस सेन्ट ऐसेन्थ को सस्पेन्ड करने की बात। इंग्लैंड के अख़बार टेलीग्राफ़ ने 27 जनवरी 2009 के दिन यह ख़बर छापी थी कि मोरेस सेन्ट को सस्पेन्ड किये जाने की वजह उसकी तरफ़ से फ़्रांस के प्रेसीडेन्ट निकोलस सारकोज़ी के बेटे के बारे में एक जोक पब्लिश करना थी। मोरेस पर यह इल्ज़ाम लगाया गया था कि उसने यहूदियों के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा करने की कोशिश की है।

इसकी दूसरी मिसालें होमोसेक्चुअलिटी पर क्रेटीसाइज़ करने को क़ानूनी तौर से मना किया जाना या होलोकॉस्ट के बारे में किसी भी तरह के सवाल या रिसर्च करने या इस पर शक करने पर पाबन्दियाँ हैं। फ़्रांस में होलोकॉस्ट पर क्रेटीसाइज़ करने की सज़ा एक साल क़ैद और तीन हज़ार फ़्रैंक जुर्माना है।

(2) किसी भी धर्म की बेएहतेरामी या बेइज़्ज़ती इन्टरनेश्नल लॉ के हिसाब से एक क्राइम है। इन्टरनेश्नल सोशल लॉ कॉन्ट्रेक्ट के आर्टिकिल नम्बर-19 और 20 में यही कहा गया है। आर्टिकिल नम्बर-19 के तीसरे क़ानून में कहा गया है कि फ़्रीडम ऑफ़ स्पीच का हक़ लिमिटेड है क्योंकि दूसरों के राइट्स का ध्यान रखना ज़रूरी है। इसी तरह आर्टिकिल नम्बर-20 में कहा गया है कि हर तरह की क़ौमी, मज़हबी और नस्ली नफ़रत फैलाना मना है। इसके अलावा 1948 में पास होने वाला यूनाइटेड नेशंस का ह्युमन राइट्स डिक्लेरेशन, 1996 में यूनाइटेड नेशंस के ह्युमन राइट्स कमीशन का डिक्लेरेशन, 12 दिसम्बर 2003 में यू.एन. समिट का स्टेटमेन्ट और 2003 में डर्बन की मीटिंग में पास होने वाला स्टेटमेन्ट भी धर्मों और मुक़द्दस (पवित्र) हस्तियों की बेएहतेरामी या बेइज़्ज़ती को ग़ैर क़ानूनी बताता है।

3) वेस्टर्न मीडिया इस्लाम की इमेज को ख़राब करने और अपने लोगों को इस्लाम से डराने के लिए अल-क़ायदा, दाइश और तालिबान जैसे आतंकियों को इस्लाम के लीडर ग्रूप्स बनाकर दुनिया के सामने लाता है। वेस्टर्न मीडिया की इस शैतानी चाल का मुक़ाबला करने के लिए दुनिया वालों के सामने इस्लाम का असली चेहरा रखना बहुत ज़रूरी है। इस्लाम की असली टीचिंग्स के बारे में दुनिया को समझाने के साथ-साथ इस्लामी कल्चर और इस्लामी सिविलाइज़ेशन की अच्छाईयों और ख़ूबसूरती को सामने लाना भी ज़रूरी हैं।

4) वेस्टर्न मीडिया की तरफ़ से इस्लाम की मुक़द्दस निशानियों और बड़ी हस्तियों की शान में गुस्ताख़ी का रीएक्शन आतंक, तोड़-फोड़ या फिर मारपीट के रूप में समाने नहीं होना चाहिए क्योंकि वेस्टर्न थिंक टैंक्स इस रीएक्शन के तौर पर सामने आने वाले आतंक को इस्लाम की इमेज बिगाड़ने के लिए इस्तेमाल करते हैं। इसलिए उनकी बद्तमीज़ियों का मुक़ाबला इन्टरनेश्नल लॉ का सहारा लेकर डिसिप्लिन के साथ होना चाहिए।

माँ-बाप और परवरिश

■ इक़बाल शाहिद

जब कोई ड्राइविंग सीखना चाहता है तो किसी न किसी से ड्राइविंग सीखता ही है। साथ ही साथ सड़क पर आने से पहले ट्रेफ़िक डिपार्टमेंट से लाइसेन्स भी लेता है। बिल्कुल इसी तरह अगर आपने कोई नेश्नल एग्ज़ाम पास कर लिया है तो आपके पास नॉलेज चाहे जितनी भी हो, आपको ट्रेनिंग करना ही पड़ती है। इसी तरह हर छोटी-बड़ी जॉब के लिए इस तरह के किसी न किसी प्रॉसेस से गुज़रना ही पड़ता है।

हम ने हमेशा एजुकेशन और परवरिश की बात की है जबकि इसे परवरिश और एजुकेशन होना चाहिए क्योंकि परवरिश पैदा होते ही शुरु हो जाती है और इसकी ज़िम्मेदारी माँ-बाप के साथ-साथ पूरे ख़ानदान की होती है। मगर परवरिश तो वही कर सकता है जिसे ख़ुद भी पता हो परवरिश होती क्या है ? परवरिश सिर्फ़ वह लोग कर सकते हैं जो अपना वक़्त दे सकते हों और बच्चों को गाइड कर सकते हों, ना कि माई बाप बनकर सिर्फ़ आर्डर दे सकते हों।

बच्चों की परवरिश से पहले माँ-बाप को यह सीखना होगा कि बच्चों की परवरिश कैसे की जाती है और साथ ही साथ बच्चों की परवरिश और उन से अपने रिश्ते को मज़बूत करने के लिए अपने सुकून के साथ समझौता भी करना होगा क्योंकि यह सिर्फ़ हमारे बच्चे ही नहीं बल्कि उस समाज का हिस्सा हैं जिसकी बर्बादी में कहीं न कहीं हम भी शरीक हैं।

अच्छे माँ-बाप बनने के लिए कुछ ज़रूरी बातें हम यहाँ पेश कर रहे हैं।

परवरिश में इनवेस्टमेन्ट करना

जिस तरह इन्सान किसी भी कारोबार को कामयाब बनाने के लिए इनवेस्टमेन्ट करता है, अपना वक़्त देता है, लोगों से मश्वरे लेता है और फिर किसी अच्छे रिज़ल्ट की उम्मीद करता है बिल्कुल उसी तरह अपने बच्चों की परवरिश के लिए भी वक़्त निकालिये। इन्टरनेट, गूगल, साइकॉलोजिस्ट और परवरिश के माहिरों, अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से मश्वरा कीजिए। अपने बच्चों की हालत, उनके बड़े होने की स्अेजेस और उनकी आदतों पर बात कीजिए। अगर कुछ फ़ीस भी देना पड़े तो कोई बात नहीं, डॉक्टर की फ़ीस समझ कर दे दीजिए।

बच्चों से हफ़्ते में एक दिन ज़रूर डिस्कशन कीजिए। टॉपिक उनकी ज़रूरतों के हिसाब से चूज़ कीजिए। आपका दिया गया वक़्त और लगाया हुआ पैसा बेहतरीन इनवेस्टमेन्ट होगा और इसके फ़ायदे सिर्फ़ आप ही नहीं बल्कि पूरा समाज उठाएगा।

उनकी ज़िन्दगी का हिस्सा बनिये

अपने बच्चों को कम से कम वक़्त के लिए अकेला छोड़िये। जब टी.वी., मोबाइल और दूसरी चीज़ों जैसे लैपटॉप या गेम्स डिवाइसेस का इस्तेमाल कर रहे हों तो उन्हें अपने साथ बिठाईये। ब्रॉउज़र हिस्ट्री चेक कर लिया कीजिए। कोशिश कीजिए कि मिलकर देख लिया करें और अगर कोई ग़लत चीज़ खुली हो तो टोकने के बजाए सही से गाइड कीजिए। फिर भी, फ़्युचर के लिए वार्निंग ज़रूर दीजिए और फिर उस पर अमल भी कीजिए क्योंकि ख़ाली दावे या डराना-धमकाना उनको और भी नाफ़रमान बना देगा।

खेलने के लिए बहन-भाईयों का साथ दीजिए या फिर भरोसे के लायक़ दोस्तों के साथ, लेकिन चेक कर लिया कीजिए या कम से कम पूछ लिया कीजिए कि क्या हुआ था या क्या चल रहा था ? यही आपको हालात से जुड़े रहने और उन्हें गाइड करने के काम आएगा।

अगर हो सके हो तो वहाँ खेलने के लिए भेजिए जहाँ कोई उन पर नज़र रख सके।

अपने बच्चों की ज़िन्दगी का हिस्सा बनिये ताकि उनको सुकून और ख़ुशी पाने के लिए दूसरों को तलाश न करना पड़े। उनके दोस्त बनिये लेकिन यह न भूलिये कि आप उनके माँ-बाप भी हैं।

मोहब्बत कीजिए, मगर हद में रहकर

अपने बच्चों से मोहब्बत ज़रूर कीजिए लेकिन आपको इन मोहब्बतों की हद भी पता होना चाहिए। बच्चे ज़िद्दी होते हैं और हर चीज़ की डिमाण्ड करते हैं, उनकी हर ख़्वाहिश को पूरा करना हमारी ख़्वाहिश तो हो सकती है लेकिन यह मोहब्बत कहीं बिगाड़ की वजह न बन जाए ? इसका फ़ैसला आप को ही करना है। इतनी मोहब्बत ज़रूर दीजिए कि वह दूसरों की मोहब्बत के पीछे न भागें।

सेल्फ़ कान्फ़ीडेन्स और हौसला बढ़ाईये

बच्चों के अच्छे कामों, उनके अच्छे ख़यालों, तजुर्बों और अच्छे इमोशंस पर उनका हौसला बढ़ाईये ताकि उनके अन्दर कान्फ़ीडेन्स की कमी न रहे। बात-बात पर टोकना, ''न करो'' की रट लगाना, उनकी बेइज़्ज़ती करना और मार-पीट का फ़ार्मूला अपनाना अब किसी

काम का नहीं रहा। उन्हें फ़ैसला करने दीजिए, बेशक! खाना पकाने या कपड़े पहनने की हद तक ही क्यों न हो लेकिन यहाँ भी हदों का ध्यान ज़रूर रखिये।

अच्छे अंकल, बुरे अंकल

हमें अच्छे अंकल और बुरे अंकल के चक्कर से निकलना पड़ेगा क्योंकि अच्छे को बुरा बनने में देर नहीं लगती। अजनबी ख़तरा, ख़तरा ज़रूर है लेकिन अगर कोई अपना है तो वह भी तो ड्रोन की तरह है जो सिर्फ़ एक ख़तरा ही नहीं बल्कि असल टार्गेट पर हमला करता है। उसको पता होता है कि कब और किस पर हमला करना है? कोई अपना भरोसे की आड़ में जो नुक़सान पहुँचाएगा अजनबी शायद ही कभी वह नुक़सान पहुँचा सके।

दूसरी बात यह कि बच्चे इस क़ाबिल नहीं होते कि वह भरोसे की आड़ में चली हुई चाल को समझ सकें, इसलिए बच्चों को दूर से सलाम करने और ख़ुद को सेक्योर रखने के बारे में बताईये और उन्हें समझाईये कि दूसरों के साथ जितना हो सके उतना फ़िज़िकल डिस्टेंस बनाकर रखें चाहे, वह दूसरा चाहे उन्हीं के जेन्डर का हो या दूसरे जेन्डर का।

गुड टच, बैड टच

गुड टच, बैड टच अच्छी सोच है मगर इस में बच्चे को सिर्फ़ यही समझाया जाता है कि जिस्म के तीन हिस्सों पर किसी का हक़ नहीं और कोई उसको नहीं छुएगा, सिर्फ़ माँ-बाप छू सकते हैं, वह भी ज़रूरत के वक़्त। लेकिन सवाल यह है कि बाक़ी जिस्म का क्या होगा? ग़लत इस्तेमाल तो हर हाल में ग़लत है। अगर कोई बच्चे, ख़ास कर बच्ची के बाक़ी जिस्म का ग़लत इस्तेमाल करता है तो क्या ऐसा करना मना नहीं हैं? अगर अच्छे अंकल बुरी नियत से टच करें तो क्या इजाज़त दे दी जाए? कामयाब माँ-बाप वही हैं जो बच्चों को समझा सकें कि आपका पूरा जिस्म आपका है और उस पर किसी का हक़ नहीं है।

ख़याली पुलाव न बनाईये

बच्चों को हक़ीक़त पसन्द बनाईये यानी उन्हें पहले की तरह परियों और जासूसों की कहानियों या पुरानी रस्मों और रिवाजों से छुटकारा दिलाईये, जैसे पैदा होते ही उनके रिश्ते तय कर देना, उनके सामने बार-बार शादी की बात करना सिर्फ़ यह सोच कर कि अगर ऐसा न किया तो सारी उम्र यह अपने अपोज़िट जेन्डर की तरफ़ नहीं जाएगा। आज-कल बच्चे दलील से समझते हैं इसलिए दलील का सहारा लीजिए। ''पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब'' के बजाए अच्छा इन्सान बनने का कॉन्सेप्ट उनके दिल और दिमाग़ में बिठाइये। फिर वह लाखों ही नहीं कमाएंगे बल्कि ''लाखों में भी एक'' होंगे।

बच्चों पर एहसान मत जताइए

अगर आप दोनों बच्चों की परवरिश के लिए ऊपर दिये गये कामों में से कोई सा भी काम कर रहे हैं, उनकी परवरिश और एजुकेशन के लिए वक़्त और पैसा लगा रहे हैं, उनकी कामयाबी और ज़िन्दगी को अच्छा बनाने के लिए ख़ून-पसीने की कमाई के साथ अपनी ख़ुशियों को क़ुर्बान कर रहे हैं, तो एहसान मत जताईये। अपना फ़र्ज़ समझ कर उनकी परवरिश कीजिए वरना वह दिन दूर नहीं जब वह सवालों की सूरत में ताबड़तोड़ हमले करके पूछने पर मजबूर हो जाएंगे कि हमें जन्म देने से पहले आपने हम से पूछा था कि इस घर में पैदा होना है कि नहीं? बेटी या बेटे के रूप में रहमतों और नेमतों की दुआओं से पहले सोचा था कि मुझे जन्म क्यों दे रहे हैं? आज अपने बच्चे की परवरिश करके आप अपना हक़ अदा कर रहे हैं तो कल वह आपके बुढ़ापे का सहारा बन कर अपना हक़ अदा कर रहे होंगे।

बच्चों की परवरिश को अपना शौक़ बनाइये

बच्चों की परवरिश को अपना शौक़ बनाइये क्योंकि शौक़ पूरा करने के लिए इन्सान हर क़दम उठा लेता है। आप दोनों फ़ेसबुक, ट्वीटर और दूसरे सोशल नेटवर्क्स पर अपना टाइम कम करेंगे तो आपको यह शौक़ पूरा करने के लिए ख़ूब वक़्त मिल जाएगा। आपको सैंकड़ों लाइक्स तो नहीं मिलेंगे मगर अपने बच्चों के दो-चार लाइक्स और एक-दो कमेन्ट्स ज़रूर मिलेंगे।

कहने और लिखने को बहुत कुछ है मगर जो नहीं है वह सिर्फ़ और सिर्फ़ एहसास है। जिसे न ख़रीदा जा सकता है न ज़बरदस्ती पैदा किया जा सकता है। आज-कल के हालात में सभी माँ-बाप को अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास होना चाहिए। अच्छे माँ-बाप कैसे बनें, इसके लिए कोर्सेस में हिस्सा लीजिए या किसी से मश्वरा कीजिए, अगर यह नहीं कर सकते तो गूगल और इन्टरनेट की दोस्ती आपको यह सब सिर्फ़ कुछ मिनटों में दे सकती है। यह सिर्फ़ हमारे ही नहीं पूरे समाज के बच्चे हैं।

इस बीमार समाज को बहुत से मसीहाओं की ज़रूरत है और शायद आपकी परवरिश नेक बच्चों के रूप में किसी के दुखों का इलाज कर सके, किसी का घर आबाद कर सके, किसी के चेहरे पर मुस्कान ला सके और वह आप दोनों भी हो सकते हैं। ●

ज़ुहैर बिन क़ैन

अलहाज आलिम हुसैन रिज़वी
रिटायर्ड ए.जी.एम., यूनियन बैंक
(9450543234)

हज़रत ज़ुहैर बिन क़ैन आशूर के दिन इमाम हुसैन[अ०] की तरफ़ से लड़ कर शहीद होने वालों में से एक हैं। आप बजीला क़बीले के थे। यह अरब का एक मशहूर क़बीला है। आप अपने ख़ानदान के बड़े ही शरीफ़ और बहुत ही बहादुर इन्सान थे। आप जहाँ जंग के मैदान में बेहतरीन लड़ने वाले थे वहीं तक़रीर के भी माहिर थे।

आपके बारे में कहा जाता है कि आप शुरू में तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उसमान से हमदर्दी रखने वालों में से थे।

हालांकि इमाम हुसैन[अ०] का क़ाफ़िला और ज़ुहैर बिन क़ैन दोनों एक ही साथ आगे-पीछे सफ़र कर रहे थे लेकिन ज़ुहैर बिन क़ैन जान-बूझ कर इमाम के क़ाफ़िले से दूर-दूर चल रहे थे ताकि इमाम का सामना ही न हो।

इस बारे में बनी फ़ज़ारा के एक आदमी का बयान कुछ यूँ मिलता है। वह कहता है कि हम 60 हिजरी में हज के बाद ज़ुहैर बिन क़ैन के साथ मक्के से इराक़ की तरफ़ जा रहे थे और उसी बीच इमाम हुसैन[अ०] भी इराक़ की तरफ़ सफ़र कर रहे थे। हम यज़ीदी हुकूमत के डर से इमाम हुसैन[अ०] के क़ाफ़िले से दूर-दूर चल रहे थे। हमारी कोशिश रहती थी कि जहाँ इमाम का क़ाफ़िला ठहरे, हम वहाँ न रुकें। पूरे रास्ते इसी तरह होता रहा कि जब इमाम का क़ाफ़िला ठहरता था तो हम ज़ुहैर बिन क़ैन के साथ वहाँ से चल पड़ते थे और अगर इमाम आगे का सफ़र शुरु कर देते थे तो हम ठहर जाते थे लेकिन अल्लाह का करना कुछ ऐसा हुआ कि एक जगह ऐसी आई जहाँ पर दोनों क़ाफ़िले एक साथ जमा हो गये। दोनों एक ही जगह ठहरे। इमाम के क़ाफ़िले के ख़ेमों से कूछ दूरी पर हम ने भी अपने ख़ेमे लगा लिये। उसी दिन जब हम सब दोपहर का खाना खा रहे थे तो इमाम हुसैन[अ०] की तरफ़ से एक आदमी आया। उसने हमें सलाम करने के बाद कहा कि ऐ ज़ुहैर! इमाम हुसैन[अ०] ने मुझे आपकी तरफ़ भेजा है और इमाम आपको बुला रहे हैं। यह बात सुनते ही हमारे होश उड़ गये। हाथों में निवाले रुक गये। ऐसा लगता था कि जैसे हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हुए हैं। इतना कहकर वह आदमी वापस चला गया।

इतने में ज़ुहैर की बीवी दलहम बिन्ते उमरु ख़ेमे में आ गईं और उन्होंने ज़ुहैर से कहा कि सुब्हानल्लाह! अल्लाह के रसूल[स०] का बेटा तुम्हें बुला रहा है और तुम जाने में आनाकानी कर रहे हो। ज़ुहैर अपनी बीवी की बात सुनकर इमाम के पास जाने के लिए तैयार हो गये।

इमाम से मिलकर जब ज़ुहैर वापस आए तो उनका चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था। वह अपने ख़ेमे में आए। अपना कुछ ज़रूरी सामान लिया और अपनी बीवी से कहा कि मैं तुम्हें तलाक़ देता हूँ क्योंकि मैं अल्लाह के रसूल[स०] की मदद करने के लिए जा रहा हूँ। अब तुम अपने ख़ानदान की तरफ़ चली जाओ क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से तुम

पर कोई मुसीबत आए।

इस काया पलट को देखकर उनकी बीवी ने कहा कि मेहरबानी करके मुझे भी अपने साथ ले चलो। तुम अल्लाह के रसूल[स०] के बेटे की मदद में जंग करना और मैं सैय्यदा ज़ैनब[स०] के दुख-दर्द में उनका साथ दूंगी।

फिर जुहैर ने अपने साथियों से कहा कि तुम में से जो भी चाहे वह मेरे साथ चल सकता है। अब यह मेरी तुम लोगों से आख़िरी मुलाक़ात है।

यह कह कर वह इमाम हुसैन[अ०] के ख़ेमों की तरफ़ चले गये। जब आगे क़ाफ़िला बढ़ा और रास्ते में जब हुर के सिपाहियों ने इमाम का रास्ता रोका तो जुहैर ने कहा कि मौला! इन कम लोगों से मुक़ाबाला करना आसान है। बाक़ी फ़ौज के आने से पहले हम इनका काम तमाम कर देते हैं।

इमाम ने कहा कि नहीं जुहैर! मैं नहीं चाहता कि इस लड़ाई की शुरुआत हमारी तरफ़ से हो। आख़िर यह क़ाफ़िला करबला पहुँच गया।

इमाम की नज़र में जुहैर बिन क़ैन की इतनी जगह थी कि नवीं मोहर्रम की शाम को जब यज़ीदी फ़ौज ने हुसैनी ख़ेमों पर हमला करने का प्रोग्राम बनाया था तो उनकी तरफ़ जब इमाम ने हज़रत अब्बास[अ०] और हबीब इब्ने मज़ाहिर को भेजा था तो उनके साथ जुहैर बिन क़ैन को भी भेजा था।

जुहैर बिन क़ैन[अ०] इमाम हुसैन[अ०] पर दिल व जान से कितना फ़िदा हो चुके थे इसका पता आशूर की रात में चला।

इमाम हुसैन[अ०] ने शबे आशूर अपने सारे साथियों को जमा करके एक ख़ुतबा दिया था। जिसमें कहा था कि मैं अपने अस्हाब (साथियों से बेहतर और वफ़ादार किसी के अस्हाब को नहीं पाता और दूसरों के हक़ के एहतेराम और नेकी में मेरे अहलेबैत से ज़्यादा किसी के अहलेबैत नहीं हैं। मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से तुम्हें या मेरे अहलेबैत को कोई नुक़सान पहुँचे। इसलिए मैं तुम सब को अपनी बैअत से आज़ाद कर रहा हूँ और इजाज़त देता हूँ कि तुम लोग इस रात के अंधेरे में जिधर चाहे चले जाओ। मेरी तरफ़ से कोई शिकायत नहीं होगी और न मेरे दिल में तुम्हारे लिए कोई बुराई आएगी। तुम अपने साथ मेरे अहलेबैत और घर वालों को भी लेते जाओ और मुझे इन लोगों में अकेला छोड़ दो। इनका झगड़ा सिर्फ़ मुझ से है। तुम मेरी तरफ़ से आज़ाद हो और तुम्हारे सामने रास्ता खुला है जिस पर कोई ख़तरा भी नहीं है। इसलिए तुम लोग रात के अंधेरे से फ़ायदा उठाकर चले जाओ।

ठीक उसी वक़्त जुहैर इब्ने क़ैन खड़े हुए और बोले, ''ऐ मेरे मौला! ख़ुदा की क़सम! अगर मुझे क़त्ल किया जाए और फिर ज़िन्दा किया जाए, फिर क़त्ल किया जाए और फिर ज़िन्दा किया जाए, इसी तरह हज़ार बार क़त्ल किया जाऊँ और ज़िन्दा किया जाऊँ, मैं फिर भी आपको अकेला छोड़ कर नहीं जाऊँगा।''

जुहैर इब्ने क़ैन के इस एलान का ज़िक्र ज़ियारते नाहिया में भी हैः ''सलाम हो जुहैर बिन क़ैन पर जिनको जब इमाम हुसैन[अ०] ने जाने की इजाज़त दी तो उन्होंने इमाम से कहा कि नहीं! ख़ुदा की क़सम! ऐसा कभी नहीं हो सकता है। क्या मैं अल्लाह के रसूल[स०] के बेटे को दुश्मनों के बीच घिरा हुआ अकेला छोड़ दूँ और अपने बचाव की फ़िक्र करूँ। अल्लाह मुझे ऐसा दिन कभी न दिखाए।''

दूसरे दिन यानी आशूर के दिन जब ज़ोह्र की नमाज़ के वक़्त इमाम हुसैन[अ०] ज़ोह्र की नमाज़ अदा कर रहे थे और यज़ीदी फ़ौज ने तीरों से हमला कर दिया था तो उस वक़्त सईद के साथ जुहैर भी इमाम का बचाव कर रहे थे और तीरों को रोक रहे थे। फिर जुहैर ने इमाम से जंग के मैदान में जाने के लिए इजाज़त माँगी। जब मैदान में आए तो यज़ीदी फ़ौज के सामने एक ख़ुतबा दिया। उन्हें समझाया और नसीहत करते हुए इमाम हुसैन[अ०] की मदद करने के लिए उकसाया कि ज़हरा[स०] का बेटा सुमैय्या के बेटे से ज़्यादा मदद का हक़दार है। इसलिए अल्लाह के रसूल[स०] के बेटे की मदद करो।

जुहैर नसीहत कर ही रहे थे कि शिम्र ने एक तीर चलाया और धमकी दी। उसके जवाब में उन्होंने शिम्र को ज़लील करते हुए कहा कि मैं तुझ से बात करना पसन्द नहीं करता क्योंकि तू जानवरों से भी गया गुज़रा है। फिर उसे ख़तरनाक अज़ाब की ख़बर दी और उसके बाद यज़ीदी फ़ौज पर हमला कर दिया।

जुहैर दुश्मन की फ़ौज पर हर तरफ़ से हमला कर रहे थे। कभी दाहिनी तरफ़, कभी बाईं तरफ़ और कभी बीच में। आपने एक सौ बीस सिपाहियों को क़त्ल किया। घमासान की जंग हो रही थी। अकेला हुसैनी सिपाही हज़ारों का मुक़ाबला कर रहा था कि इतने में अब्दुल्लाह शाबी और मुहाजिर इब्ने औस तमीमी ने जुहैर पर धोखे से हमला कर दिया। एक ने भाला मारा और दूसरे ने तलवार का वार किया जिस से जुहैर संभल न सके और ज़मीन पर आ गये। इसके बाद आपको शहीद कर दिया गया।

जब इमाम हुसैन[अ०] को जुहैर की शहादत की ख़बर मिली तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह जुहैर के क़ातिलों पर लानत करे जो बन्दरों और सुअरों की शक्लों में बिगड़ चुके हैं। उनके क़ातिलों पर हमारी भी लानत है।

यह थे जुहैर बिन क़ैन जिनकी बहादुरी और वफ़ादारी रहती दुनिया तक उनकी याद को बाक़ी रखेगी।

Islamic Life Style

ध्यान रखिए!

हमारे बच्चे हमारी कॉपी नहीं होते,
बल्कि ख़ुद हम ही होते हैं, वक़्त के परों पर उड़ने वाला हमारा कल।
अगर हम ने उनकी इस्लामी परवरिश कर ली तो यूँ समझिए कि हम इस दुनिया से अपने लिए एक पूंजी छोड़कर जाएंगे।
हर पल याद रखिए और गांठ बांध लीजिए!

इमाम हसन अ०
का लश्कर क्यों बिखर गया था ?

■ सुप्रीम लीडर अली ख़ामेनई

इमाम हसन अ० के सामने सिचुवेशन यह थी कि एक तरफ़ से लोगों को एक आराम भरी और शानदार ज़िन्दगी की आदत पड़ चुकी थी। दूसरी तरफ़ इस्लाम की दो दुश्मन ताक़तों यानी ईरान और रोम की ठाठ-बाठ उनकी नज़रों के सामने आ चुके थे।

इस्लामी हुकूमतें इसी शान और ठाठ-बाठ की तरफ़ मुड़ चुकी थीं। ख़लीफ़ा ने साफ़-साफ़ अमीरे शाम मुआविया के कामों को सही ठहरा दिया था। लोगों ने आकर कहा भी कि अमीरे शाम मुआविया अपने लिए महल बना रहे हैं, बादशाहों जैसी ज़िन्दगी बिता रहे हैं तो ख़लीफ़ा ने जवाब दिया, ''यह अरबी दुनिया का किसरा है'' यानी इस काम में कोई मुश्किल नहीं है क्योंकि यह हुकूमत पिछले बादशाहों के मुक़ाबले में है। इसलिए इसमें भी बादशाहों वाली ठाठ-बाठ होना चाहिए।

अमीरे शाम मुआविया के ठाठ-बाठ ने लोगों में एक नई सोच को जन्म दे दिया था। इस सोच ने आम लोगों के इमोशंस को उभार दिया था और उनको भी दुनिया की शानदार और आराम भरी ज़िन्दगी की तरफ़ मोड़ दिया था।

दूसरी मुश्किल यह थी कि कूफ़े वालों ने पाँच साल तक जंग की थी और अब वह थक चुके थे। अब ऐसे हालात में इमाम हसन अ० को मुआविया से जंग करना थी।

इमाम हसन अ० एक ऐसे समाज में रह रहे थे जिस के अंदर से इस्लामी रूह निकल चुकी थी, जिसमें अच्छे लोग कम थे और इस्लाम को पहचानने वाले तो बहुत ही कम थे।

इमाम हसन अ० एक ऐसे समाज में हुकूमत कर रहे थे जिसमें उनकी इस्लामी सोच और आइडियालोजी के बारे में बहुत कम लोग जानते थे। बहुत कम ऐसे लोग थे जो उनके मिशन को समझ सकते हों और उसमें उनकी दिलचस्पी भी हो लेकिन अमीरे शाम मुआविया की हुकूमत एक ऐसे समाज पर थी जिसमें रहने वाले लोग पूरी तरह से हुकूमत के साथ थे।

अमीरे शाम मुआविया का मिशन क्या था? मुआविया का मिशन यह था कि उनके पास, उनके साथियों के पास, फिर उन साथियों के साथियों के पास और फिर आम लोगों के पास ज़्यादा से ज़्यादा माल व दौलत और ताक़त हो।

सीधी सी बात है कि लोग ऐसी हुकूमत के साथ होंगे और कम से कम बड़े लोग तो पूरी तरह से साथ होंगे।

मिस्र के एक स्कॉलर महमूद अक़्क़ाद कहते हैं कि अली अ० एक ऐसे समाज पर हुकूमत कर रहे थे जिसमें युनिटी नहीं थी और मुआविया की एक ऐसे समाज पर हुकूमत थी जिसमें बिल्कुल भी आपसी मतभेद नहीं था। मुआविया की बीस साल की हुकूमत में ऐसे ही हालात बना दिये गये थे। दूसरी तरफ़ मुआविया को रिश्वत पर बहुत भरोसा था जबकि इमाम हसन अ० की हुकूमत में हक़ और क़ानून से हट कर किसी दूसरी चीज़ पर अमल नहीं होता था। साथ ही इमाम हसन अ० के साथियों में से कुछ लोगों को मुआविया ने लालच भी दी थी। मुआविया की लालच यह नहीं थी कि फ़ौरन ही रिश्वत दे दी जाएगी बल्कि सारा काम वादों पर होता था कि मैं अपनी बेटी से तुम्हारी शादी कर दूँगा, अपनी बहन से तुम्हारी शादी कर दूँगा, इतना पैसा दूँगा या वहाँ की हुकूमत दे दूँगा लेकिन इमाम हसन अ० इस में से कोई एक काम भी नहीं कर सकते थे। ऐसा हो ही नहीं सकता था कि इमाम हसन अ० अम्रे आस को लिख देते कि अगर तुम मुआविया के ख़िलाफ़ कोई काम करोगे तो मैं तुम को उस स्टेट की हुकूमत दे दूँगा। ऐसा हो ही नहीं सकता था।

इमाम हसन अ० के लिए अम्रे आस और मुआविया में

कोई फ़र्क़ नहीं था। उनके लिए अम्रे आस भी मुआविया की तरह ही था और मुआविया अम्रे आस की तरह। इमाम हसन[अ०] की नज़र में इस मशीनरी में मौजूद या इस मशीनरी से बाहर इस सोच वाला हर आदमी बराबर था। इमाम हसन[अ०] के सामने बात लोगों की नहीं थी बल्कि जो भी हक़ के मुक़ाबले में हो वह इमाम हसन[अ०] की नज़र में बातिल यानी ग़लत रास्ते पर था।

इमाम हसन[अ०] सिर्फ़ मुआविया ही नहीं बल्कि इस तरह के सब लोगों के मुक़ाबले में थे।

साथ ही इस बीच कुछ दूसरी ऐसी बातें भी हुईं जो इमाम हसन[अ०] के रास्ते के बिल्कुल उलट थीं। उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास का असली चेहरा खुलकर सबके सामने आ गया था कि वह बहुत कमज़ोर इन्सान है। इस चीज़ का इमाम हसन[अ०] से कोई लेना-देना नहीं है। इमाम हसन[अ०] ने बारह हज़ार लोगों को भेजा था और उनके लिए तीन लोगों की जंगी स्ट्रेटिजी कमेटी भी बनाई थी। इस कमेटी में पहले नम्बर पर उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास था, दूसरे क़ैस बिन सअद बिन उबादह थे और तीसरा एक और आदमी था। इन तीन लोगों को बारह हज़ार सिपाहियों के लश्कर की कमान संभालने के लिए भेजा गया था जो मसकिन में पहले से मौजूद था।

मरहूम आले यासीन ने बहुत सी दलीलों के ज़रिये साबित किया है कि उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास को लश्कर का सरदार बनना था और ऐसे ही आदमी को लश्कर का सरदार बनना भी चाहिए था। इस आर्टिकिल में इस पर ज़्यादा बात नहीं कर सकते क्योंकि फिर बात बहुत लम्बी हो जाएगी।

उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास के दो बेटे मुआविया के हाथों मार दिये गये थे। क्या ऐसे आदमी को लश्कर का कमांडर बनाना सही नहीं था? उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास हाश्मी ख़ानदान से भी थे। यह तो सब ही जानते हैं कि हाश्मी ख़ानदान बनी उमैय्या का दुश्मन था। उधर उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास इमाम हसन के रिश्तेदार भी थे और सोच, आइडियालोजी, समाज और सोशल स्टेटस में इमाम के साथ-साथ भी थे। इन सब के अलावा उनके दो छोटे बच्चे मुआविया के हाथों मारे गये थे और वह अपने बच्चों के क़ातिल से जंग करने जा रहे थे। क्या ऐसे आदमी को मुआविया से जंग के लिए भेजना सही नहीं था? इसी लिए इमाम हसन[अ०] ने ऐसे उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास को कमांडर बनाकर जंग करने के लिए भेजा था लेकिन मुश्किल हालात में कुछ लोग इरादे की कमज़ोरी और दूसरी इन्सानी कमज़ोरियों का शिकार हो जाते हैं जिसकी वजह से वह ग़द्दारी कर बैठते हैं और ऐसे हालात में इन्सान को इस तरह की मजबूरियों के भंवर से सिर्फ़ मज़बूत इरादा ही बचा सकता है।

उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास भी इन्हीं कमज़ोरियों का शिकार हो गये। मुआविया के ज़रिये दिये गये 10 लाख दिरहम या 10 लाख दीनार की रिश्वत ने उनको धोखा दे दिया और वह रातों रात इमाम हसन का साथ छोड़कर चले गये। लोग सुबह उठे तो देखा कि उनका कमांडर ही नहीं है। सूरज निकल आया लेकिन वह नहीं आया। ख़ेमे में जाकर देखा तो वहाँ भी नहीं था। फिर पता चला कि उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास आधी रात को ही चले गये हैं। उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास के भाग जाने से इमाम हसन[अ०] के लश्कर को पहली बड़ी चोट पहुँची।

अब इसके बाद मसकिन में मौजूद फ़ौज की कमान क़ैस बिन सअद के हाथों में थी मगर मुआविया ने यह अफ़वाह फैला दी थी कि इमाम हसन[अ०] और मुआविया ने सुलोह कर ली है। इस ख़बर ने फ़ौज पर दूसरा हमला किया लेकिन चूँकि यह लोग अपनी सोच में दूसरों से ज़्यादा मज़बूत थे और इनकी कमान क़ैस बिन सअद जैसे मोमिन, मुत्तक़ी और इन्क़ेलाबी आदमी के हाथों में थी इसलिए फ़ौजियों ने इस ख़बर पर यक़ीन नहीं किया। फिर भी कुछ लोग लश्कर छोड़ कर चले गये लेकिन अकसर लोग वहीं रहे।

मदायन का लश्कर आपसी मतभेद का सेंटर था। इमाम हसन[अ०] की फ़ौज में सारी कमज़ोरियों और मतभेदों का सेंटर यही मदायन का लश्कर है। इसमें मतभेद की हर वजह मौजूद थी। इसमें इस्लामी सोच से दूर रहने का भी असर था, मुआविया के जासूसों का भी असर था और ख़्वारिज का भी असर था। इन सब के अलावा कुछ ऐसी अफ़वाहें भी थीं कि इमाम हसन[अ०] सुलोह करना चाहते हैं या क़ैस बिन सअद ने सुलह कर ली है या फिर उबैदुल्लाह भाग चुका है। रही-सही कसर इन अफ़वाहों ने पूरी कर दी थी जिससे लोगों के बीच काफ़ी मतभेद पैदा हो गये थे।

इमाम हसन[अ०] इनमें से कोई भी तरीक़ा नहीं अपना सकते थे। इमाम हसन[अ०] के लिए उसूलों की पाबन्दी हर चीज़ से ऊपर थी। ऐसा हो ही नहीं सकता था कि तौहीद को मानने वाला स्ट्रेटजी के तौर पर किसी जगह कोई ऐसा काम कर दे जिस काम में शिर्क मिला हो। ऐसा कोई भी काम करना इस्लामी उसूलों के ख़िलाफ़ होता। इन उसूलों की पाबन्दी इमाम हसन[अ०] के लिए मुआविया के तरीक़े को अपनाने में एक बहुत बड़ी रूकावट थी।

●●●

28 सफ़र शहादत

इमाम हसन असकरी[अ०]

अपने शियों से क्या चाहते हैं?

■ तवक्कुल शम्सी

1- हमारे इमाम[अ०] चाहते हैं कि हम सोचने-समझने वाले बनें।

इसीलिए इमाम असकरी[अ०] फ़रमाते हैं:

''तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि तुम ग़ौर व फ़िक्र से काम लो, हिकमत के दरवाज़े की चाबी यही सोच-विचार है और दिलों को ज़िन्दा रखने का ज़रिया भी यही है।''

जो लोग अपनी अक़्ल से काम नहीं लेते और बसीरत की आँख से देखना नहीं सीखते, वह लोग क़यामत में अन्धे उठाए जाएंगे। हज़ार से ज़्यादा बार इल्म और उस से निकलने वाले लफ़्ज़ क़ुरआन में आए हैं, 17 बार हमें हमारे पैदा करने वाले ने सोच-विचार का हुक्म दिया है और दीन में ग़ौर व फ़िक्र की बात भी हम से बार-बार कही है।

इन्सानों की जिस्मानी और रूहानी मेराज सोच-विचार के ज़रिये ही होती है। यही वह रास्ता है जिस पर चलकर इन्सान अमल के मैदान में परवरिश पाता है।

हज़रत अबूज़र की सबसे बड़ी इबादत ग़ौर व फ़िक्र ही थी। क्या हम ने अपने मौला[अ०] की यह बात नहीं सुनी:

''इबादत ज़्यादा नमाज़ें पढ़ने और रोज़े रखने का नाम नहीं है बल्कि ग़ौर व फ़िक्र करना ही असली इबादत है''।

2- हमारे इमाम[अ०] चाहते हैं कि हम सच्चे मोमिन बन जाएं। जिस ग़ौर व फ़िक्र के बाद इन्सान ईमान तक न पहुँच पाए वह ग़ौर व फ़िक्र किसी काम का नहीं होता। हमें सिर्फ़ ईमान तक ही नहीं पहुँचना है बल्कि हमें क़ब्र तक ईमान अपने साथ लेकर जाना है।

इमाम असकरी[अ०] फ़रमाते हैं,

''दो सिफ़तों से बढ़ कर कोई सिफ़त नहीं: एक अल्लाह पर ईमान और दूसरे अपने भाईयों को फ़ायदा पहुँचाना।''

जो ईमान हमें अपने दूसरे भाईयों की मदद और ख़िदमत से रोक दे वह ईमान नहीं सिर्फ़ गोरख धंधा है।

3- हमारे इमाम[अ०] हम से चाहते हैं कि हम ख़ुदा और मौत की याद को अपने आप से अलग न करें और क़यामत की याद से ग़ाफ़िल न हों।

''ख़ुदा को और मौत को ज़्यादा से ज़्यादा याद करो और क़ुरआन की ख़ूब तिलावत करो।''

4- हमारे इमाम[अ०] हम से चाहते हैं कि हम हर रोज़ सूरज की किरनों के उभरते ही अपने आप से यह वादा करें कि गुनाह नहीं करेंगे। फिर इस वादे को शैतान के वस्वसों से बचाकर रखें, फिर रात का अंधेरा छाते ही इसे अपने ज़मीर

की अदालत में खड़ा करें और अपना हिसाब व किताब ख़ुद करना सीखें।

अपने ज़ख़्मों को अपने हाथ से छूने से दर्द का एहसास कम होता है।

5- हमारे इमाम[अ०] हमें वसिय्यत कर गए हैं कि ऐ हमारे चाहने वालो! तक़वा को अपनी पहचान बना लो, गुनाहों से बचने की आदत डालो, सच्चाई तुम्हारा ओढ़ना-बिछौना हो, अमानतदारी से तुम्हारी पहचान हो, लम्बे सजदे तुम्हारी शान बनें, तुम अच्छे हमसफ़र व पड़ोसी बन कर रहो, बीमारों को देखने जाओ और तुम्हारे अख़्लाक़ से अपनाईयत झलकती हो। इन चीज़ों को देखकर जब कोई यह कहे कि तुम हमारे शिया हो तो हमें ख़ुशी मिलती है।

6- हमारे इमाम[अ०] हम से चाहते हैं कि हम ऐसे हो जाएं कि हमें बेहतरीन लोगों में गिना जाने लगे।

इमाम से किसी ने पूछा कि यह बेहतरीन लोग कौन होते हैं? इमाम ने फ़रमाया कि यह वह लोग हैं जो उन चीज़ों से भी ख़ुद को रोक लेते हैं जिनके हलाल या हराम होने के बारे में पता न हो, यह वह लोग हैं जो वाजिब कामों को पूरा करते हैं, हराम कामों से दूर रहते हैं और हमेशा गुनाहों से बचने की बात सोचते रहते हैं।

अच्छा! बुरे लोग कौन होते हैं?

इमाम ने फ़रमाया कि बुरे लोग वह होते हैं जो दो चेहरों और दो ज़बानों वाले होते हैं, बाहर से कुछ होते हैं, अन्दर से कुछ होते हैं, अपने कामों और अपनी चीज़ों की तारीफ़ करते हैं और दूसरों के कामों और दूसरों की चीज़ों की बुराई करते हैं।

7- हमारे इमाम[अ०] हम से चाहते हैं कि हम ऐसे कामों से बचें जो हमें ज़लील कर दें क्योंकि ख़ुदा ने हमें इज़्ज़त और एहतेराम देकर भेजा है। उसने हमें ख़ुद को छोटा और ज़लील करने की इजाज़त नहीं दी है, उसे पसन्द नहीं कि हम उसके अलावा किसी और के सामने झुकें।

इमाम[अ०] फ़रमाते हैं, ''मोमिन के लिए कितनी बुरी बात है कि उसके दिल में किसी ऐसी चीज़ की चाहत हो जिसकी वजह से वह ज़लील हो सकता है।''

इमाम ने यह भी फ़रमाया है,

''हक़ को छोड़ कर कोई भी इज़्ज़त वाला हो वह ज़लील हो जाता है और इसी तरह कोई भी गिरा पड़ा इन्सान हो अगर वह हक़ पर अमल करने लगे तो वह इज़्ज़त वाला बन जाता है।''

8- हमारे इमाम[अ०] हम से चाहते हैं:

''तुम हमारे लिए इज़्ज़त व ज़ीनत की वजह बनना, हमारे शर्मिन्दा होने की वजह न बनना।''

क्योंकि तुम हम से जुड़ गए हो इसलिए तुम्हारी इज़्ज़त अब तुम्हारी इज़्ज़त नहीं बल्कि हमारी इज़्ज़त है और तुम्हारी ज़िल्लत हमें शर्मिन्दा कर सकती है।

9- हमारे इमाम[अ०] हम से चाहते हैं कि हम अपने आप को बातिल की कुर्सी और ओहदों से बचाकर रखें क्योंकि यह एक ऐसी बीमारी है जो बिदअतों को जन्म देती है, ख़ुदा की ख़िलाफ़त की हक़ीक़त को बदल कर उसे असली रास्ते से हटा देती है, अपनी मर्ज़ी से क़ुरआन की तफ़सीर का दरवाज़ा खोल देती है, शहवतों का ग़ुलाम बना देती है, इसने हर ज़माने के इब्राहीम[अ०] के लिए आग जलाई है, इसने हर ज़माने के मूसा[अ०] का कभी फ़िरऔन, कभी क़ारून, कभी सामरी बन कर रास्ता रोका है, इसने रहमत बन कर आने वाले रसूल[स०] के रास्ते में काँटे बिछाए हैं, इसका रास्ता सक़ीफ़ा को जाता है, इसने फ़ातिमा ज़हरा[स०] को रुलाया है, इसने इमामों के गले काटे हैं और इसी ने अली[अ०] की बेटियों को कूफ़ा व शाम में फिराया है। ज़रा हिस्ट्री में झाँक कर देखो, इसने इन्सानियत को कितना नुक़सान पहुँचाया है।

10- हमारे इमाम[अ०] फ़रमाते हैं कि ग़ैबत का ज़माना बड़ा सख़्त है। इसलिए तुम सब्र का साथ न छोड़ना और मज़बूती से डटे रहना। आले मोहम्मद[अ०] की बातों से दूर न होना, इमाम के ज़ुहूर की ज़बान और अमल से दुआ करना और विलायत पर साबित क़दम रहना।

■ इब्ने हैदर मूसवी

अरबईन वॉक

ज़ायरों की ज़बानी

इटली से राफ़ाइल माइलोः

सद्दाम हुसैन की हुकूमत में अज़ादारी और अरबईन पर पाबन्दी थी, इसलिए इराक़ पर अमेरीकियों के हमले से पहले यूरोप वालों को अरबईन के बारे में कुछ भी पता नहीं था, लेकिन सद्दाम की हुकूमत के ख़त्म होने के बाद जब इराक़ियों को आज़ादी मिली और नजफ़ से करबला के बीच अरबईन वॉक का सफ़र शुरु हुआ तो धीरे-धीरे यूरोपियन्स तक भी इस वॉक की ख़बरें पहुँचना शुरू हुईं लेकिन उस वक़्त तक वह लोग यही सोचते थे कि अरबईन के इस प्रोग्राम में सिर्फ़ इराक़ी शिया ही जाते हैं।

पिछली सदियों में ईसाईयों के यहाँ तरह-तरह की ज़ियारतों के प्रोग्राम हुआ करते थे जिन्हें सब ईसाई मिल कर मनाया करते थे, इसी लिए अरबईन की ज़ियारत का यह एंग्लि ईसाईयों को बड़ी आसानी से समझ में आने लगा था। वैसे अरबईन वॉक में आने वाले ज़ायरों की तादाद को सामने रखा जाए तो इस वॉक को दुनिया के किसी भी दूसरे प्रोग्राम से नहीं मिलाया जा सकता। करोड़ों लोग इस वॉक में आते हैं जिसे बहुत अच्छी तरह और ख़ूबसूरती के साथ मैनेज किया जाता है।

अरबईन वॉक या अरबईन मार्च एक पीस-फ़ुल मार्च है जो पूरी दुनिया को अमन का मैसेज देता है। यहाँ लोग एक साथ मिल जुल कर अमन-शान्ति के साथ ज़ियारत करते हैं। इसे और अच्छी तरह से समझने के लिए इसके बारे में ज़्यादा से ज़्यादा रिसर्च होना चाहिए। हर साल ईरान और इराक़ में इन्टरनेश्नल कान्फ़्रेंसेस होती हैं और उम्मीद है कि आगे यूरोप में भी इस तरह की कान्फ़्रेंसेस की जाएंगी जिस से अरबईन को बेहतर समझने और समझाने में मदद मिलेगी।

अरबईन के अंदर कई बहुत ही ख़ास बातें छुपी हुई हैं। सबसे ख़ास बात इसका ज़ियारत वाला का एंग्लि है। ज़ियारत एक फ़िज़िकल एक्सपीरियंस है। अरबईन में लोग पैदल इतना बड़ा सफ़र तय करके इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत करने जाते हैं।

इसका दूसरा एंग्लि रूहानी और इन्सानी एंग्लि है। इस पूरे सफ़र में ज़ियारत करने वाला अपनी दुनियावी ज़िन्दगी को छोड़ देता है और अपनी ज़िंदगी दीन, रूहानियत और इन्सानियत के नाम कर देता है। यह चीज़ें काफ़ी हद तक ईसाईयों में भी हैं इसलिए वह अच्छी तरह से इसे समझ सकते हैं।

इसी लिए हम देखते हैं कि अरबईन के सफ़र में ईसाई भी आते हैं। अरबईन में एक ऐसा अट्रेक्शन पाया जाता है कि जो पूरी दुनिया को अपनी तरफ़ ख़ींचता है।

अमेरिका से जॉन शॉकः

अरबईन मार्च दुनिया का सबसे बड़ा प्रोग्राम है। अरबईन मार्च में आने वाले लोग अलग-अलग मुल्कों, क़ौमों, ज़बानों, और फ़िरक़ों के होते हैं लेकिन उनमें से कोई भी अपने फ़िरक़े की बात नहीं करता बल्कि सबके इकटठा होने का एक ही प्वाइंट होता है और वह यह है कि सब इन्सान हैं।

मैं पहली बार करबला आया हूँ और मैं अरबईन के इस प्रोग्राम में शामिल होकर ख़ुद को बहुत ख़ुश नसीब समझ रहा हूँ। यहाँ जो भी हमें मिलता है वह बड़े प्यार से मिलता है और हमें देख कर ख़ुश होता है।

मेरी नज़र में अरबईन इस ज़मीन का सबसे बड़ा प्रोग्राम है जो अमन का मैसेज दे रहा है और जो पूरी तरह से पीस-फ़ुल है। मुझे इस से काफ़ी उम्मीद मिली है। करोड़ों लोगों का इस तरह इतने बड़े प्रोग्राम में आना

उन लोगों को भी काफ़ी जोश दिलाता है जो हक़ और इंसाफ़ के लिए कोशिशें कर रहे हैं और ज़ुल्म व नाइंसाफ़ी से लड़ना चाहते हैं।

सबसे ख़ूबसूरत चीज़ जो मुझे यहाँ देखने को मिली वह यह थी कि लोग जब इमाम हुसैन[अ०] के हरम में आते हैं तो वह सिर्फ़ अपने लिए दुआ नहीं करते बल्कि पूरी दुनिया के लिए दुआ करते हैं जिस से पता चलता है कि सच्ची इन्सानियत और इन्सानी इज़्ज़त बस यहीं ज़िन्दा है।

पाकिस्तान से तौक़ीर खरलः

अगर पैदल चलने वालों का हाल बताऊँ तो अगर पैदल चलने वालों से इस लम्बे सफ़र की वजह पूछी जाए तो हमें इश्क़ के अलावा कोई जवाब नहीं मिलता। पैदल जाने वालों के इस सफ़र में कुछ लोग अकेले और कुछ ग्रुप में चलते हैं, बहुत से लोग चुपचाप दुआ पढ़ते रहते हैं, कुछ तस्बीह में, छोटे बच्चों से लेकर व्हील चेयर पर बैठे मर्द और औरतें सब इस ग्रेट मार्च में दिखाई पड़ते हैं। इस मार्च में सबसे बड़ी तादाद जवानों की होती है जो करबला की तरफ़ बढ़ रहे होते हैं। इस ग्रेट मार्च में पैदल चलने वालों के मुँह से तरह-तरह ज़बानें सुनी जा सकती है, मगर तरह-तरह की ज़बानों में बात करने वाले बस एक ही बात करते हैं और वह इमाम हुसैन[अ०] की बात होती है।

यहाँ मुल्कों के बाडर्स मिट जाते हैं, नेश्नलिटी का रंग फीका पड़ जाता है, यहाँ सभी लोग एक ही रंग में रंगे होते हैं, यानी इमाम हुसैन[अ०] का रंग। यह सब हुसैनी हैं, इमाम[अ०] की हुकूमत में रहने वाले। यह हुसैनी कहीं भी आबाद हों मगर उनकी हुकूमत की राजधानी करबला है और पैदल चलने वाले यह आशिक़ यह कहते नज़र आते हैं कि शुक्रिया या हुसैन[अ०]! आपने हम सबको इकट्ठा कर दिया। इमाम हुसैन[अ०] की चाहत दिल में सारी अच्छाईयों से चाहत करने की तरह है। यह कैसे हो सकता है कि इमाम[अ०] के इश्क़ में दर्जनों मील पैदल सफ़र करने वाला जब घर वापस आए तो गुनाहों से दूर न रहे ?जी चाहता है फिर से उस करबलाई दुनिया में चला जाऊँ, लेकिन यह वक़्त दिल को पाक करने का है और यह सोचने का है कि इस सफ़र में इमाम हुसैन[अ०] से किये हुए वादों पर कितना अमल किया ?

अरजेन्टाइना से अब्दुल करीम बाज़ः

अब तक तीन बार करबला की ज़ियारत कर चुका हूँ, जिनमें से दो बार अरबईन मार्च पर। पहली बार जब मैंने अरबईन में पैदल सफ़र किया तो मेरे लिए एक अलग ही तरह का और बड़ा ही प्यारा एक्सपीरियंस था। रास्ते में इमाम हुसैन[अ०] से लोगों की मोहब्बतों को देख कर मैं बहुत हैरान हो रहा था।

जब मैं पहली बार आम दिनों में इराक़ ज़ियारत के लिए आया तो इमाम अली[अ०] के हरम में मुझे बहुत अच्छा लगा और काफ़ी अपनाईयत सी लगी। लेकिन अरबईन के सफ़र में मुझे लगा जैसे मैं एक समन्दर में उतर आया हूँ और उसमें उतर कर मैंने इमाम हुसैन[अ०] से इश्क़ का मज़ा चख लिया है। वहाँ मैंने करबला को अच्छी तरह से महसूस किया और सीधे इमाम हुसैन[अ०] के साथ जैसे मेरा दिली रिश्ता सा बन गया।

हम ईरान के रास्ते इराक़ जा रहे थे। बार्डर पर हम ने एक ईरानी लेडी को देखा जो अपने बच्चों के साथ थी। उसके पास पासपोर्ट-वीज़ा कुछ भी नहीं था और न ही सफ़र के लिए कोई पैसे थे। वह लोग शलम्चा बार्डर तक हमारे साथ आए थे और पता नहीं कैसे उन से किसी जगह पासपोर्ट और वीज़ा के बारे में पूछा ही नहीं गया। नजफ़ में भी हम ने उन्हें कई बार देखा। जब हम ईरान लौटे तो हमारे एक साथी ने बताया कि वह लेडी और उसके बच्चे ज़ियारत करके अपने घर लौट चुके हैं। इस सफ़र में आपको इस तरह की चीज़ें भी देखने को मिलेंगी जिन्हें देख कर आप हैरान रह जाएंगे और शायद आप यक़ीन न करें।

अल्लाह के रसूल स॰
की कुछ बातें

■ आयतुल्लाह अली नक़ी नक़वी

अल्लाह के रसूल स॰ ने 40 साल की उम्र में रिसालत का एलान किया था। 13 साल हिजरत से पहले मक्के की ज़िन्दगी है और दस साल हिजरत के बाद मदीने की ज़िन्दगी।

यह तीनों पीरियड बिल्कुल अलग-अलग हालात रखतें हैं जिनमें से हर दौर बिल्कुल एक अलग रंग में रंगा हुआ है। ऐसा नहीं कि रंग और ढंग अलग-अलग हों लेकिन हैं एक-दूसरे से बिल्कुल अलग।

पहले चालीस 40 के पीरियड में आपकी ज़बान बिल्कुल ख़ामोश और सिर्फ़ किरदार बोल रहा है। यही आपकी सच्चाई का एक साइकॉलोजिकल सुबूत है क्योंकि जो लोग ग़लत दावे करते हैं उनकी बातों की स्पीड को देखा जाए तो लगेगा कि वहाँ पहले उनके दिल व दिमाग़ में ख़याल आता है कि हमें कोई दावा करना चाहिए मगर उनके अंदर हिम्मत नहीं होती इसलिए वह कुछ ऐसी बातें भी कह देते हैं जिन से सुनने वालों को कभी डर लगता है और कभी इत्मिनान, फिर वह धीरे-धीरे आगे क़दम बढ़ाते हैं, पहले कोई ऐसा दावा करते हैं जिसको बहानों का लिबास पहना कर लोगों की सोच के मुताबिक़ बनाया जा सके या जिसकी असलियत को सिर्फ़ ख़ास-ख़ास लोग समझ सकें और आम लोग महसूस ही न करें। जब झिझक निकल जाती है तो फिर जी कड़ा करके खुल कर दावा कर देते हैं। इसकी मौजूदा मिसालें अली मोहम्मद बाब और ग़ुलाम अहमद क़ादियानी में बहुत आसानी से तलाश की जा सकती हैं।

अल्लाह के रसूल स॰ की ज़बान से चालीस साल तक कोई बात ऐसी नहीं निकली जिस से लोग सोच भी पाते कि आगे चलकर आप अपनी रिसालत का एलान करने वाले हैं या कोई बेचैनी उनमें पैदा होती। ग़लत से ग़लत रिवायत भी ऐसी नहीं है जो बताए कि मक्के वालों ने आपकी किसी एक बात से भी किसी ऐसे दावे का एहसास किया हो जिस पर उनमें नाराज़गी पैदा हुई हो और फिर आपको अपनी सफ़ाई देना पड़ी हो। बल्कि उस ज़माने में आपका का काम सिर्फ़ अपनी ज़िंदगी की प्रेक्टिकल पिक्चर दिखाना थी जिसने दिलों को मोह लिया था और आप हर एक दिल में बसते थे। इसके बाद चालीस साल की उम्र में जब रिसालत का एलान किया तो वह बिल्कुल वही था जो आख़िर तक आपका दावा रहा। यह नहीं हुआ कि यह दावा पहले हलका हो और फिर बाद में इस पर ज़ोर दिया गया हो या पहले दावा कुछ हो और फिर धीरे-धीरे उसमें तरक़्क़ी हुई हो।

अब इस एलान के बाद आपको कितनी मुसीबतें और तकलीफ़ें बर्दाश्त करना पड़ीं वह सबको पता है। यह ज़माना वह था कि जब आपके सर पर कूड़ा फेंका जाता था और जिस्म

28 सफ़र

पर पत्थरों की बारिश होती थी। तेरह साल इसी तरह गुज़रते हैं मगर एक बार भी ऐसा नहीं होता कि आपका हाथ तलवार की तरफ़ चला जाए और जिहाद का फ़ैसला कर लिया हो।

अगर कोई दावे की ज़िन्दगी के सिर्फ़ इसी एक पीरियड को देखे तो समझ जाएगा कि जैसे आप सख़्त रवैय्ये को बिल्कुल अच्छा नहीं समझते थे और यह रास्ता इतना मज़बूत है कि कोई भी तकलीफ़, दिल पर लगाई जाने वाली कोई भी चोट और कोई तंज़ आपको रास्ते से नहीं हटा सकता।

पहले चालीस साल ही की तरह अब यह रंग इतना गहरा और यह रास्ता इतना पक्का है कि इसके बीच कोई एक बात भी इसके उलट नहीं दिखाई पड़ती। कोई बेबस और बेकस भी हो तो किसी वक़्त तो उसे जोश आ ही जाता है और वह जान देने या जान लेने के लिए तैयार हो जाता है, फिर चाहे उसे और ज़्यादा ही मुसीबतें क्यों न बर्दाश्त करना पड़ें मगर एक दो साल नहीं तेरह साल लगातार इस अटल सब्र और सुकून के साथ वही जी सकता है जिसके सीने में वह दिल और दिल में वह जज़्बात ही न हों जो जंग पर उभार सकते हैं।

इसी बीच वह वक़्त भी आता है कि मक्के के मुश्रिक आपकी ज़िन्दगी के चिराग़ को बुझाने का फ़ैसला कर लेते हैं और एक रात को चुन लिया जाता है कि उस रात में सब मिल कर आपको शहीद कर डालेंगे। उस वक़्त भी अल्लाह के रसूल[स०] तलवार नियाम से बाहर नहीं लाते। किसी मुक़ाबले के लिए खड़े नहीं होते बल्कि ख़ुदा के हुक्म से शहर ही छोड़ देते हैं। जिसे हज़रत मोहम्मद[स०] की पहचान न हो वह इस पीछे हटने को क्या समझेगा ?यही कि जान के डर से शहर छोड़ दिया। फिर हक़ीक़त भी यह है कि जान की हिफ़ाज़त के लिए ही यह सब किया गया था लेकिन सिर्फ़ जान बचाने के लिए नहीं बल्कि जान बचाने के साथ-साथ उस मिशन को भी बचाना था जो जान के साथ जुड़ा हुआ था।

अब इस काम के बारे में यानी शहर छोड़ने के लिए कोई कुछ भी कहे मगर इस काम को दुनिया बहादुरी तो नहीं समझेगी और अगर सिर्फ़ इस काम को देख कर उस हस्ती के बारे में कोई फ़ैसला करेगा तो उसका फ़ैसला हक़ीक़त से कोसों दूर होगा बल्कि गुमराही का सुबूत होगा।

अब 53 साल की उम्र है और आगे बुढ़ापे के बढ़ते हुए क़दम हैं। बचपन और जवानी का अच्छा ख़ासा हिस्सा ख़ामोशी में रहकर और चुपचाप गुज़रा है। फिर जवानी से लेकर अधेड़ उम्र का पीरियड पत्थर खाते और झेलते हुए गुज़र रहा है। आख़िर में अब जान को बचाने के लिए शहर छोड़ दिया है। भला कौन सोच सकता है कि जो एक वक़्त में अपनी जान बचाने के लिए अपना शहर ही छोड़ दे वह कुछ ही वक़्त में फ़ौजों की कमान संभालता हुआ नज़र आएगा जबकि मक्का ही नहीं बल्कि मदीने में आने के बाद भी आपने जंग की कोई तैयारी नहीं की थी। इसका सुबूत यह है कि एक साल के बाद जब दुश्मनों से जंग करना पड़ी तो आपके लश्कर में सिर्फ़ 313 फ़ौजी, सिर्फ़ 13 तलवारें और दो घोड़े थे।

ज़ाहिर है कि एक साल की तैयारी का रिज़ल्ट यह नहीं हो सकता था। जबकि उस एक साल में बहुत से दूसरे काम भी किये गये थे। मदीने में कई मस्जिदें बन गई थीं, मक्के से आने वालों के घर बन गये थे। बहुत से अदालती और फ़ौजी क़ानून लागू हो गये थे और इस तरह समाज में हुकूमत का एक स्ट्रक्चर बन गया था मगर जंग का कोई सामान नहीं बन सका था। इस से भी पता चल रहा है कि आपकी तरफ़ से जंग का कोई सवाल नहीं था मगर जब मुश्रिकों की तरफ़ से हमले की पहल हो गई तो उसके बाद बद्र की जंग है, ओहद की जंग है, ख़न्दक़ जंग है, ख़ैबर की जंग है और फिर हुनैन की जंग है। फिर यह भी नहीं कि अपने घर में बैठकर फ़ौजें भेज दी हों और कामयाबी का सेहरा अपने सर बाँध लिया हो बल्कि अल्लाह के रसूल[स०] का रोल यह था कि छोटी-मोटी जंगों में तो किसी को भी सरदार बनाकर भेज दिया लेकिन हर बड़ी और ख़तरनाक जंग में फ़ौज के सरदार ख़ुद होते थे और यह नहीं कि अपने साथियों या सहाबियों को ढाल बनाए हुए उनके घेरे में हों बल्कि इस्लाम के सबसे बड़े सिपाही हज़रत अली[अ०] की गवाही है कि जब जंग बहुत सख़्त हो जाती थी तो हमेशा अल्लाह के रसूल[स०] ही हम सबसे ज़्यादा दुश्मन के क़रीब होते थे।

फिर यह भी नहीं कि यह जंग फ़ौज के भरोसे पर लड़ी जाती रही हो बल्कि ओहद में यह वक़्त भी आ गया था कि एक-दो को छोड़ कर सारे मुसलमानों से मैदान ख़ाली हो गया था। मगर उस वक़्त भी वह इन्सान जो कुछ ही वक़्त पहले अपनी जान के बचाव के लिए शहर छोड़ चुका था वह इस वक़्त ख़तरे की ऐसी हालत में जब आसपास कोई भी सहारा देने वाला नज़र नहीं

आता, अपने रास्ते से एक क़दम भी पीछे नहीं हटता। अल्लाह के रसूल[स०] ज़ख़्मी हो जाते हैं, चेहरा ख़ून से भर जाता है, सर पर लगे जंगी ख़ोल की कड़ियाँ टूट कर सर के अन्दर चली जाती हैं, दाँत ज़ख़्मी हो जाते हैं मगर अपनी जगह से पीछे नहीं हटते।

अब क्या अक़्ल और इंसाफ़ पर चलते हुए मक्का छोड़कर मदीने में आकर बस जाने का मतलब जान का वह डर लिया जा सकता है जिस से बहादुरी पर धब्बा आए ?बिल्कुल नहीं। यही हम ने पहले कहा था कि सिर्फ़ इस एक काम को देखकर जो भी फ़ैसला किया जाएगा वह गुमराही का सुबूत होगा।

अल्लाह के रसूल[स०] की बहादुरी की असली पहचान बस हज़रत अली[अ०] को थी। जंगे ओहद में हज़रत मोहम्मद[स०] के क़त्ल की आवाज़ ने इस्लामी फ़ौज के पैर उखाड़ दिये थे। इस से इमाम अली[अ०] पर क्या असर हुआ था ? इसे ख़ुद आपने बाद में बताया है कि मैंने देखा तो अल्लाह के रसूल[स०] कहीं नहीं दिखे। मैंने दिल में कहा कि दो ही हालतें हो सकती हैं; या तो वह शहीद हो गये और या अल्लाह ने ईसा[अ०] की तरह उन्हें भी आसमान पर उठा लिया।

दोनों हालतों में मैं अब ज़िन्दा रह कर क्या करूँगा। बस यह सोचना था कि मैंने अपनी नियाम तोड़ कर फेंक दी और तलवार लेकर फ़ौज में कूद पड़ा। जब फ़ौज हटी तब कहीं जाकर अल्लाह के रसूल[स०] नज़र आए।

देखने वाली बात यह है कि हज़रत अली[अ०] के दिमाग़ में सिर्फ़ यही दो बातें आईं कि या तो अल्लाह के रसूल[स०] शहीद हो गये या ख़ुदा ने उन्हें आसमान पर उठा लिया। यह ख़याल भी नहीं आया कि शायद अल्लाह के रसूल[स०] भी मैदान के किसी कोने में छुप गए होंगे। यह हज़रत अली[अ०] का ईमान है अल्लाह के रसूल[स०] की बहादुरी पर।

ईसाईयों ने अल्लाह के रसूल[स०] की तस्वीर सिर्फ़ इसी जंग के ज़माने की यूँ खींची कि एक हाथ में क़ुरआन है और एक हाथ में तलवार। मगर जिस तरह रसूल[स०] की सिर्फ़ इस ज़िन्दगी को सामने रख कर वह फ़ैसला करना ग़लत था कि आप किसी तरह की सख़्ती को नहीं मानते थे या सीने में वह दिल ही नहीं रखते थे जो दुश्मन का मुक़ाबला कर सके, उसी तरह सिर्फ़ इस दूसरे पीरियड को सामने रख कर यह तस्वीर खींचना भी ज़ुल्म है कि बस क़ुरआन है और तलवार।

आख़िर यह किसकी तस्वीर है ?मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] की ना ?तो मोहम्मद[स०] नाम तो उस पूरी ज़िंदगी का है जिसमें वह चालीस साल भी हैं, वह तेरह साल भी हैं और अब यह दस साल भी हैं।

इस तरह देखें तो अल्लाह के रसूल[स०] की सही तस्वीर तो वह होगी जो उनकी सारी ज़िन्दगी को सामने रखकर बनाई जाए। यह सिर्फ़ एक हिस्सा दिखाने वाली तस्वीर तो हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] की नहीं मानी जा सकती।

फिर इस दस साल में भी बद्र, ओहद, ख़न्दक़ और ख़ैबर की जंगों से आगे बढ़ कर ज़रा हुदैबिया तक भी तो आईये। यहाँ अल्लाह के रसूल[स०] किसी जंग के लिए नहीं बल्कि हज की नियत से मक्के की तरफ़ आ रहे थे। साथ में वही मज़बूत दिलों वाले सिपाही भी थे जो हर मैदान में जीत का झंडा गाड़ते आ रहे थे और सामने मक्के में वही लोग हैं जो हर मैदान में हारते रहे थे।

फिर भी मक्के वालों के तेवर देखिये कि रास्ता रोक लेते हैं कि हम हज नहीं करने देंगे। अरब के क़ानून के हिसाब से हज का हक़ हर एक को था। उनका अल्लाह के रसूल[स०] को हज करने से रोकना उसूली तौर पर जंग की वजह बनने के लिए काफ़ी था मगर अल्लाह के रसूल[स०] ने इस वक़्त पर भी चढ़ाई करके जंग करने के इल्ज़ाम से ख़ुद को बचाते हुए सुलोह करके लौट जाने को सही समझा और सुलह भी कैसी शर्तों पर ?ऐसी शर्तें जिन्हें बहुत से साथ जाने वाले अपनी बेइज़्ज़ती समझ रहे थे। इस सुलोह से मुसलमानों में आमतौर से बेचैनी फैली हुई थी क्योंकि सुलोह में ऐसी शर्तें थीं जैसी एक जीतने वाला किसी हारने वाले से मनवाता है।

शर्तें कुछ इस तरह की थीं कि इस वक़्त वापस जाईये, इस साल हज न कीजिए, अगले साल आईयेगा, सिर्फ़ तीन दिन तक मक्के में रहियेगा, चौथे दिन आप में से कोई भी दिखाई न पड़े, साल के बीच हम में से कोई भाग कर आपके पास चला जाए तो आपको लौटाना पड़ेगा और आप में से कोई भाग कर हमारे पास आ जाए तो हम नहीं लौटाएंगे।

मक्के वालों कोयह शर्तें रखने की हिम्मत क्यों हुई ? सिर्फ़ इसलिए कि वह नुबुव्वत के मिज़ाज से यह समझ चुके थे कि आप इस वक़्त जंग नहीं करेंगे। छोटा आदमी जब यह समझ लेता है कि सामने वाला तलवार नहीं उठाएगा तो वह बढ़ता ही चला जाता है। आप ने सब शर्तें

मान लीं और लौट गए।

इसके बाद जब मुश्रिकों की तरफ़ से एग्रीमेन्ट तोड़ा गया तो आपने मक्के को जीत लिया।

ज़रा सोचिए! जो कुछ पहले हो चुका था उसकी बुनियाद पर उस वक़्त पर एक इन्सान के क्या इमोशंस हो सकते हैं ?जिन्होंने तेरह साल पत्थर मारे, जिन्होंने बेइज़्ज़ती करने और तकलीफ़ पहुँचाने में कोई कमी नहीं छोड़ी, जिनकी वजह से अपना शहर छोड़ना पड़ा, और इसके बाद भी चैन नहीं लेने दिया बल्कि जब तक दम में दम रहा बार-बार हमले करते रहे जिसमें अल्लाह के रसूल[स०] के कितने ही प्यारे शहीद हो गये। आज वही लोग सामने थे और बिल्कुल बेबस। बड़ा अच्छा मौक़ा था कि उनके पिछले हर जुल्म की आज सज़ा दे दी जाती, मगर ख़ुदा के इस रहमत रसूल ने जब उन्हें बेबस पाया तो माफ़ी का आम एलान कर दिया और ख़ून की एक बूंद भी ज़मीन पर गिरने नहीं दी।

अब दुनिया बताए कि अल्लाह के रसूल[स०] जंग करने को अच्छा समझते थे या अमन को ?

असल बात तो यह है कि उनकी जंग या सुलोह कोई भी इन्सानी इमोशंस की बुनियाद पर नहीं थी बल्कि अपनी ड्युटी और अपनी ज़िम्मेदारी की वजह से थी। जिस वक़्त ड्युटी यह थी कि ख़ामोशी रहें तो ख़ामोश रहे और जब हालात के बदलने से जंग की ज़रूरत की पड़ गई तो जंग करने लगे। फिर जब सुलोह का वक़्त आया तो सुलोह कर ली। जब दुश्मन बिल्कुल बेबस हो गया तो अपना करम दिखते हुए उसे माफ़ भी कर दिया।

अलग-अलग हालात में यह अलग-अलग ज़िम्मेदारियाँ थीं जो वक़्त के साथ-साथ बदल रही थीं।

HK

KAZIM
Zari Art

All kinds of
Sarees, Suits, Lehnga
& Designer Wedding Gown

Work shop
Ahata Dhannu Beg, kazmain Road
Sa'adat ganj, Lucknow

Showroom
1st floor, Doctor Gopal Pathak Building
latouch road, Hevett road Lucknow

Contact No.
+91-9795907202, 9839126005

सूरए कौसर

आयतुल्लाह
नासिर मकारिम शीराज़ी

यह सूरह मक्के में उतरा था और इस सूरे की तीन आयतें हैं।

सूरए कौसर कब नाज़िल हुआ ?

इस सूरे के बारे में लिखा है कि मुश्रिकों का एक सरदार आस इब्ने वायल एक दिन अल्लाह के रसूल[स०] से मिला। यह उस वक़्त की बात है जब अल्लाह के रसूल[स०] मस्जिद से बाहर निकल रहे थे। यह आदमी कुछ देर आप से बातें करता रहा। क़ुरैश के बहुत से बड़े मस्जिद में बैठे थे और दूर से आस इब्ने वायल को अल्लाह के रसूल[स०] के साथ बातें करते हुए देख रहे थे। जब वह मस्जिद के अन्दर गया तो उन लोगों ने पूछा, ''किस से बात कर रहे थे ?''

कहने लगा उस ''अबतर'' आदमी से।

अब सवाल यह है कि आस इब्ने वायल ने अल्लाह के रसूल[स०] को अबतर क्यों कहा ? और अबतर का क्या मतलब है ?

इसका जवाब यह है कि हज़रत ख़दीजा से अल्लाह के रसूल[स०] के दो बेटे थेः एक ''क़ासिम'' और दूसरे ''ताहिर'' जिन्हें ''अब्दुल्लाह'' भी कहा जाता था। इन दोनों की वफ़ात मक्के ही में हो गई थी। इस तरह अल्लाह के रसूल के घर में अब कोई बेटा नहीं था। इस से क़ुरैश वालों को मौक़ा मिल गया था और इसी वजह से उन्होंने अल्लाह के रसूल[स०] को अबतर कहना शुरु कर दिया था। अबतर यानी वह इन्सान जिसकी नस्ल आगे नहीं बढ़ सकती और जिसका कोई वारिस न हो।

वह लोग सोच रहे थे कि अल्लाह के रसूल[स०] का कोई बेटा नहीं है जो उनके बाद उनके मिशन को आगे बढ़ाए, इसलिए जब अल्लाह के रसूल[स०] की आंख बंद हो जाएगी तो सब कुछ अपने आप ख़त्म हो जाएगा और उनका मिशन आगे नहीं बढ़ पाएगा। यही सोच-सोच कर वह सब लोग बहुत ख़ुश हो रहे थे।

तभी क़ुरआन की यह आयतें उतरीं और एक छोटे से सूरे ने उनकी सारी बातों का जवाब दे दिया।

इस सूरे ने अल्लाह के रसूल[स०] को बताया कि आप नहीं बल्कि आपके दुश्मन अबतर होंगे और इस्लाम व क़ुरआन का मिशन कभी नहीं रुकेगा।

इस सूरे में जो ख़ुशख़बरी दी गई है, वह एक तरफ़ इस्लाम के दुश्मनों को मायूस करने वाली थी और दूसरी तरफ़ अल्लाह के रसूल[स०] को तसल्ली और उम्मीद दिलाने वाली थी क्योंकि दुश्मनों की तरफ़ से इस बुरे लफ़्ज़ यानी अबतर को सुनने के बाद अल्लाह के रसूल[स०] का दिल बहुत दुखी हुआ था।

सूरए कौसर

इस सूरे की तिलावत के बारे में अल्लाह के रसूल[स०] फ़रमाते हैं, ''जो भी इस सूरे की तिलावत करेगा ख़ुदा उसे जन्नत की नहरों का पानी पिलाएगा।''

इस सूरे का नाम इसकी पहली आयत में ''अल-कौसर'' से लिया गया है।

بسم الله الرحمن الرحيم

''ख़ुदा के नाम से जो बहुत मेहरबान और रहम करने वाला है।''

आयत नम्बर-1

انا اعطيناك الكوثر

''हम ने आपको कौसर दिया है।''

इस सूरे में सारी बातें अल्लाह के रसूल[स०] से कही जा रही हैं। सूरए ''ज़ोहा'' और सूरए ''अलम नश्रह'' की तरह इस सूरे का एक मक़सद भी अल्लाह के रसूल[स०] की ज़िन्दगी में आने वाली मुश्किलों, दुश्मनों की तरफ़ से दी जाने वाली तकलीफ़ों और तानों की वजह से अल्लाह के रसूल[स०] के दुखी दिल को सुकून पहुँचाना और उनकी हिम्मत बढ़ाना था।

कौसर क्या है ?

अब सवाल यह है कि ''कौसर'' का क्या मतलब है ? और यह कौसर है क्या ?

एक हदीस में है कि जब यह सूरह अल्लाह के रसूल[स०] पर उतरा तो आप[स०] मिंबर पर गये और आपने इस सूरे की तिलावत की। सहाबियों ने पूछा, ''ऐ अल्लाह के रसूल! यह क्या है जो ख़ुदा ने आपको दिया है ?''

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया, ''यह जन्नत की एक नहर है जो दूध से ज़्यादा सफ़ेद है, शीशे के बर्तन से ज़्यादा साफ़ है और इसके दोनों तरफ़ मोतियों और याक़ूत से बने हुए गुम्बद हैं।

कुछ ने कौसर का मतलब नुबुव्वत बताया है, कुछ ने क़ुरआन और कुछ ने कहा है कि इसका मतलब यह है कि आपके सहाबी और साथी बहुत ज़्यादा होंगे।

कुछ उलमा यह भी कहते हैं कि इसका मतलब यह है कि आपकी नस्ल बहुत ज़्यादा फैलेगी जो आपकी बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] से होगी।

कुछ उलमा ने कौसर का मतलब शिफ़ाअत भी बताया है।

अब सवाल यह है कि इनमें से कौन सी बात सही है ?

इसका जवाब यह है कि सारी बातें सही हैं यानी कौसर एक ऐसा लफ़्ज़ है जिसमें यह सभी चीज़ें शामिल हैं। जो चीज़ें ऊपर बयान की गई हैं वह सब और उनके अलावा भी बहुत सी चीज़ें हो सकती हैं जिन सबको कौसर के अंदर लाया जा सकता है।

यहाँ इस बात की तरफ़ भी ध्यान देने की ज़रूरत है कि यह बात ख़ुदा ने उस वक़्त अपने रसूल[स०] से कही थी जब ज़ाहिरी तौर पर इस बात की कोई ख़ास निशानी या असर दिखाई नहीं दे रहा था। इसका मतलब यह है कि फ़्युचर के बारे में एक ख़बर दी जा रही थी जो ख़ुद एक मोजिज़ा है और अल्लाह के रसूल[स०] की सच्चाई और उनके हक़ पर होने की एक निशानी है।

आयत नम्बर-2

فصل لربك وانحر

''तो अपने ख़ुदा के लिए नमाज़ पढ़िये और क़ुर्बानी दीजिए।''

यह इतनी बड़ी नेमत जो दी गई है, इसके लिए शुक्र भी ज़रूरी है। इसमें कोई शक नहीं है कि बन्दे के शुक्र से ख़ुदा की नेमत का हक़ कभी अदा नहीं हो सकता, बल्कि उसकी तरफ़ से शुक्र की तौफ़ीक़ भी अपने आप में एक नेमत है लेकिन फिर भी बन्दे की ज़िम्मेदारी बनती है कि उसका शुक्र करे।

इस आयत में कहा गया कि अपने रब की इबादत करो क्योंकि नेमत देने वाला वही है। इसलिए नमाज़ और इबादत भी सिर्फ़ उसी की की जा सकती है।

दूसरी तरफ़ यह मुश्रिकों की ग़लत रसम का तोड़ भी है क्योंकि वह लोग नेमतें तो ख़ुदा की खाते थे और सर बुतों के आगे झुकाते थे। इसके ज़रिये ख़ुदा ने सबको ध्यान दिलाया कि सजदा और इबादत सिर्फ़ ख़ुदा की होना चाहिए क्योंकि नेमतें देने वाला बस वही है।

आयत नम्बर-3

ان شانئك هو الابتر

''बेशक आपका दुश्मन अबतर है।''

आख़िरी आयत में कहा गया है कि मक्के के मुश्रिक आप पर जो ताने कसते और कहते थे कि इनकी नस्ल ख़त्म हो जाएगी, जान लीजिए कि नस्ल आपकी ख़त्म नहीं होगी बल्कि उन लोगों की ख़त्म होगी और उनका कोई नाम लेने वाला भी नहीं होगा।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] कौसर हैं

हम ने ऊपर भी कहा है कि कौसर में कई चीज़ें आ सकती हैं और इसमें बहुत सी बरकतें और नेमतें शामिल हैं लेकिन बहुत से शिया उलमा का मानना है कि अगर कौसर का कोई सही नमूना ढूँढा जाए तो हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] इसका सबसे बड़ नमूना हैं।

हम ने शुरु ही में कहा था कि मक्के के मुश्रिक पैग़म्बर[स॰] को ताने देते थे कि आपकी नस्ल ख़त्म हो जाएगी लेकिन ख़ुदा ने कहा कि हम ने आपको कौसर जैसी नेमत दी है।

इस आयत पर ध्यान देने से यही बात समझ में आती है कि कौसर का मतलब हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स॰] हैं क्योंकि आपके ज़रिये दुनिया में अल्लाह के रसूल[स॰] की नस्ल चली है बल्कि हज़रत फ़ातिमा[स॰] की नस्ल ने ही दीन को बचाया है, इसे फैलाया है और आने वाली नस्लों तक ख़ुदा का मिशन पहुँचाया है। इस नस्ल में सिर्फ़ हमारे इमाम ही नहीं बल्कि इन इमामों की नस्लें भी आती हैं।

फ़ख़्रे राज़ी की बात

अहलेसुन्नत के एक मशहूर आलिम और क़ुरआन के मुफ़स्सिर फ़ख़्रे राज़ी कहते हैं:

यह सूरह उन लोगों के जवाब में आया है जो कहते थे कि अल्लाह के रसूल[स॰] की नस्ल आगे नहीं बढ़ेगी और उनका मिशन फ़ेल हो जाएगा लेकिन इस सूरे ने आकर अल्लाह के रसूल[स॰] की एक ऐसी नस्ल की ख़बर दी जो हमेशा बाक़ी रहेगी।

फ़ख़्रे राज़ी कहते हैं: अहलेबैत[अ॰] की नस्ल को मारा गया, शहीद किया गया लेकिन फिर भी दुनिया भर में यह नस्ल फैली हुई है। जबकि बनी उमैय्या की नस्ल से कोई ऐसा नहीं है जिसका नाम अच्छाई के साथ लिया जाता हो।

फ़ख़्रे राज़ी यह भी लिखते हैं कि आप ज़रा हिस्ट्री को उठाकर देखिये, अल्लाह के रसूल[स॰] की नस्ल में कितने बड़े-बड़े उलमा पैदा हुए हैं, कितनी बड़-बड़ी हस्तियाँ गुज़री हैं जैसे बाक़िर, सादिक़ और नफ़्से ज़किय्यह वग़ैरा।

हज़रत फ़ातिमा[स॰] की नस्ल से करोड़ों लोग दुनिया में फैले। उनके बीच लिखने वाले, उलमा, फ़क़ीह, मोहद्दिस, मुफ़स्सिर, गवर्नर और हर तरह के लोग पैदा हुए जिन्होंने हर तरह की क़ुर्बानियाँ देकर इस्लाम को बचाया और फैलाया है।

دوماہی
مؤمّل
لکھنؤ

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

آج ہی ممبر بنئے
زرسالانہ
Rs.150

द्विमासिक
मुअम्मल
लखनऊ
MUAMMAL

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org

कहानी

■ अफ़रोज़ इनायत

अपनों का साथ हर दुख का इलाज

ज़ैनब (मोबाइल पर देवर से, जो न्यूयार्क में रहते हैं): ओह हो! यह तो बहुत बुरी ख़बर है... लेकिन यह सब हुआ कैसे... मेरा मतलब है कि क्या तुम ने दोनों का टेस्ट करवाया ?

रेहानः हाँ! आपको तो पता ही है कि इस बीमारी ने क्या तबाही मचा रखी है, वैसे तो पूरी दुनिया में ही इसका असर नज़र आ रहा है लेकिन न्यूयार्क में... अल्लाह माफ़ करे!

ज़ैनब (बेचैनी से): तो अब अनम और राशिदा दोनों ही अस्पताल में हैं ?

रेहानः नहीं! नहीं भाभी... अस्पताल जाना तो अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर है। मैंने अपने सभी ख़ास डॉक्टर दोस्तों से कॉन्टेक्ट किया, टेस्ट जब पॉज़िटिव आया तो उन्हीं दोस्तों ने सख़्ती से कहा कि कुछ एहतियात करते रहिए। कुछ दवाईयों का इस्तेमाल करवाईये और क्वारन्टाइन घर में ही करवाईये। साथ ही हेल्थ रूल्स के मुताबिक़ बेटी और बीवी का ख़ास ध्यान भी रखिये। आज छटा या सातवाँ दिन है, अल-हम्दोलिल्लाह! काफ़ी बेहतरी आई है इन दोनों में।

ज़ैनबः अल-हम्दोलिल्लाह रेहान...! हम तो परेशान हो गये थे। आप अपना भी ख़ास ख़याल रखियेगा क्योंकि यह फैलने वाली बीमारी है। हम लोग यहाँ अटलान्टा में हैं वरना ज़रूर आपकी मदद करते।

रेहानः शुक्रिया भाभी। आप सब भी अपना बहुत ख़याल रखियेगा। लोगों से मिलना-जुलना कम ही रखिएगा।

ज़ैनब (शौहर से): मैं तो रेहान और उनकी फ़ैमिली के लिए बहुत परेशान हूँ। परदेस, फिर बीमारी। बीवी और बेटी दोनों एक साथ ही बीमार हुई हैं। मुझे तो रेहान की बड़ी टेन्शन है, घर के सभी काम... खाना बनाना, दोनों माँ-बेटी का ख़याल रखना... यह सब वह अकेले कैसे करेंगे! अगर हम लोग ही उनके आसपास होते तो कुछ न कुछ मदद ज़रूर करते। ऐ ख़ुदा! तू ही उनकी फ़ैमिली और उन पर रहम फ़रमा!

दूसरी तरफ़ रेहान बड़ी लगन और एहतियात के साथ सभी ज़िम्मेदारियाँ निभा रहे थे। यह उनकी अपनी बीवी और बेटी से मोहब्बत ही थी जिसकी वजह से यह कठिन वक़्त गुज़र गया था। दोनों माँ-बेटी की निगेटिव रिपोर्ट ने रेहान की सारी थकन और दुख को दूर कर दिया था जिस से वह पिछले बीस दिनों से गुज़र रहे थे। बीवी और बेटी ने भी शुक्र अदा किया कि उनके पास एक मेहरबान बाप और मोहब्बत करने वाला शौहर है जिसके ज़रिये अल्लाह ने उन्हें मुश्किल घड़ी से ठीक-ठाक बाहर निकाल लिया, वरना न जाने अस्पताल में उनके साथ क्या होता।

यह केस कोई अनोखा केस नहीं है कि अपनों के लिए किसी ने इतनी तकलीफ़ उठाई हो... आए दिन हम ऐसी बातें सुनते और देखते रहते हैं, ख़ास कर आज कल के हालात में जब हर एक को अपनी टेन्शन है, हर एक अपनी सेहत के लिए परेशान है, ऐसी बीमारी कि इसके मरीज़ के पास भी जाने से लोग डरते हैं, लेकिन इस हक़ीक़त को भी नहीं नकारा जा सकता कि कोरोना से जूझ रहे लोग अस्पताल से ज़्यादा घरों में ठीक हो रहे हैं। अगर घर वालों का पूरा ध्यान, मोहब्बत और देखभाल उन्हें मिल जाए तो कोरोना का मरीज़ आसानी से ठीक हो सकता है। इसकी मिसालें हमें अपने चारों तरफ़ नज़र भी आ रही हैं कि कहीं बीवी अपने शौहर के लिए मसीहा बन गई, तो कहीं माँ अपनी औलाद के लिए और कहीं शौहर ने अपना आराम-सुकून छोड़ कर बीवी और बच्चों पर अपना सारा वक़्त लगा दिया। बेशक! इस से भी इनकार नहीं कि अस्पतालों में डॉक्टर और पैरामेडिकल स्टाफ़ भी अपनी ड्युटी निभा रहे हैं, लेकिन यहाँ हमारा मक़सद अपने आसपास रहने वाले रिश्तों पर बात करना है।

ख़ुदा ने अपने बन्दों को बड़े ख़ूबसूरत और प्यारे-प्यारे रिश्तों की डोर में बांधा है जो उसकी ज़िन्दगी को बहुत अच्छा बना देते हैं। यह अनमोल रिश्ते सिर्फ़ आम हालात में ही नहीं बल्कि कठिन और मुश्किल हालात में भी एक-दूसरे का सहारा होते हैं जिसकी वजह से इन रिश्तों की अहमियत और भी बढ़ जाती है। ख़ुदा ने हर इन्सान को दूसरे इन्सान के साथ ''इन्सानियत'' के रिश्ते में पिरोया हुआ है, लेकिन जिन रिश्तों की हम बात कर रहे हैं वह ऐसे ख़ास रिश्ते हैं जिनकी जगह कोई और रिश्ता नहीं ले सकता।

जी हाँ! यह रिश्ते हैंः माँ-बाप का औलाद के साथ रिश्ता, औलाद का माँ-बाप के साथ रिश्ता, शौहर का बीवी के साथ, बीवी का शौहर के साथ रिश्ता या बहन-भाईयों का आपस में रिश्ता। वह भी बिना किसी लालच के एक-दूसरे से जुड़े रहना। शायद आप में से कुछ लोग मेरी इन बातों को न मानें... जिसकी वजह यह हो सकती है कि हर घर में यह रिश्ते इतने अच्छे, इतने भरोसे वाले और इतनी वफ़ादारी भरे नहीं होते, लेकिन हम गिनती के कुछ घरों में कुछ लोगों के इन रिश्तों की अहमियत को न समझने और इन्हें न निभाने की वजह से सबको एक जैसा नहीं समझ सकते और न ही समझना चाहिए।

आज ज़िन्दगी बहुत मुश्किल दौर से गुज़र रही है। कोरोना जैसी ख़तरनाक बीमारी, लॉक-डाउन, फ़ाइनेन्शल प्रॉब्लम, इन से पैदा होने वाली दिमाग़ी और साइकॉलोजिकल प्रॉब्लम्स वग़ैरा... लेकिन ऐसे हालात ने हमारे दिलों में इन रिश्तों की जगह पहले से ज़्यादा बना दी है। हमारे आसपास कई जगह ऐसे ही हालात नज़र आ रहे हैं जहाँ इन अनमोल रिश्तों ने ख़ुद को तकलीफ़ में रख कर अपनों को बचाने की कोशिश की और ख़ुदा ने भी उन्हें मायूस नहीं किया।

इन रिश्तों की पहचान ही यह है कि यह आपको मुश्किल में अकेला नहीं छोड़ते, बल्कि एहसास दिलाते हैं कि हम आपके साथ हैं, हम आपकी तकलीफ़ों को महसूस करते हैं, हम इस मुश्किल वक़्त में आपको अकेला नहीं छोड़ सकते। देखा जाए तो ऐसे ही अनमोल रिश्तों की वजह से इन्सान को ताक़त मिलती है और उसके अन्दर हर मुश्किल से लड़ने का हौसला पैदा होता है, जिसके बाद वह बड़ी से बड़ी बीमारी का भी सामना कर सकता है।

ख़ुदा ने जहाँ हमारे ऊपर बहुत सी नेमतों और रहमतों की बारिश की है वहीं इन रिश्तों के ज़रिये भी हमें मज़बूत किया है। इसलिए ख़ुदा की तरफ़ से दिये हुए इन रिश्तों की हमें क़द्र करना चाहिए, बल्कि इनकी अहमियत को समझना भी चाहिए, और इन रिश्तों को अपने चारों तरफ़ देख कर अपने प्यारे रब का शुक्र भी अदा करना चाहिए कि हम अकेले नहीं हैं।

अल्लाह सबको अपने-अपने प्यारों के साथ सलामत रखे, और वक़्त पर एक-दूसरे का साथ देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए!

UNITY WEEK

12 - 17
RABI-UL-AWWAL

■ मोहम्मद सज्जाद शाकिरी

युनिटी वीक क्यों मनाया जाए ?

रबीउल अव्वल वह महीना है जिसमें सारी दुनिया के लिए रहमत बन कर आने वाले अल्लाह के आख़िरी रसूल[स०] पैदा हुए थे।

अहलेसुन्नत का मानना है कि आप[स०] की विलादत 12 रबीउल अव्वल को हुई थी और शियों का मानना है कि आप 17 रबीउल अव्वल को पैदा हुए थे।

कुछ लोग इसी 12 और 17 को लड़ाई का इशू बना लेते हैं जबकि यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि जिस पर लड़ाई-झगड़ा किया जाए और मुसलमान दुनिया को तमाशा दिखाते फिरें।

इमाम ख़ुमैनी मुसलमानों से कहा करते थे कि इन छोटी-छोटी बातों पर लड़ने के बजाए अल्लाह के रसूल[स०] की ज़ात पर इकट्ठा होने की कोशिश की जाए क्योंकि ख़ुदा ने आपको मुस्लिम युनिटी का सेंटर बनाकर भेजा है। इसी बात को देखते हुए इमाम ख़ुमैनी ने 12 से 17 रबीउल अव्वल को हफ़्त-ए-वह्दत यानी युनिटी वीक का नाम दिया ताकि दुनिया के सारे मुसलमान यह पूरा हफ़्ता आपसी युनिटी के साथ मनाएं और रसूले अकरम[स०] की विलादत का जश्न मनाने के साथ आपकी टीचिंग्स को समझने और एक-दुसरे को समझाने की कोशिश करें।

युनिटी के बारे में सबसे पहले यह जान लेना ज़रूरी है कि मुसलमानों के बीच युनिटी का हुक्म ख़ुद क़ुरआन ने भी दिया है जैसा कि क़ुरआन फ़रमाता है:"तुम सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और फूट न डालो।"[1]

"तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जो खुली दलीलें आ जाने के बाद भी बंट गये और इख़्तेलाफ़ का शिकार हो गये।"[2]

"जिन लोगों ने अपने दीन में फूट डाली और टुकड़े-टुकड़े हो गये, उन से आपका कोई लेना-देना नहीं है।"[3]

"यह आपकी उम्मत हक़ीक़त में एक उम्मत है और मैं आपका रब हूँ, इसलिए आप सिर्फ़ मेरी इबादत कीजिए।"[4]

"ख़बरदार! मुश्रिकों में से न हो जाना, उन लोगों में से जिन्होंने दीन में फूट डाली है और टुकड़ों में बंट गये हैं, फिर हर ग्रूप जो कुछ उसके पास है, उसी में मगन है।"[5]

क़ुरआन की इन आयतों को सामने रखकर युनिटी वीक का मतलब अपने आप समझ में आ जाता है और वह है क़ुरआन की इन बातों पर अमल करना।

मुसलमानों के बीच युनिटी अल्लाह के रसूल[स०] की सुन्नत है जैसे आप फ़रमाते हैं:

"मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान अमन में हों।"[6]

"मुसलमान, मुसलमान का भाई है। मुसलमान न एक-दूसरे पर जुल्म करते हैं और न एक-दूसरे को गाली देते हैं।"[7]

"मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं, सबका ख़ून बराबर है...।"[8]

"मोमिन की इज़्ज़त, माल व दौलत और उसके ख़ून का एहतेराम ज़रूरी है।"[9]

"जिसकी सुबह इस हालत में हो कि उसे दूसरे मुसलमानों के हालात की कुछ ख़बर ही न हो तो ऐसा आदमी मुसलमानों में से नहीं है और जो किसी मुसलमान की फ़रियाद सुने और उसके लिए कुछ न करे तो ऐसा आदमी मुसलमान ही नहीं है।"[10]

अल्लाह के रसूल[स०] की इन हदीसों को ध्यान में रखकर मुस्लिम युनिटी के लिए युनिटी वीक मनाना अल्लाह के रसूल[स०] के हुक्म और उनकी सुन्नत पर अमल करने का नाम है।

मुसलमानों के बीच युनिटी हज़रत अली[अ०] की एक बहुत बड़ी चाहत थी जिस पर इमाम[अ०] ने बार-बार बात की है:

"मुसलमानों के साथ हो जाओ चूँकि अल्लाह का हाथ इत्तेफ़ाक़ व इत्तेहाद (युनिटी) रखने वालों के ऊपर है। फूट डालने और अलग होने से बचो क्योंकि अपनी क़ौम से अलग हो जाने वाला शैतान के हिस्से में चला

जाता है, जिस तरह गल्ले से कट जाने वाली भेड़ भेड़िये को मिल जाती है।''[11]

''उनका अल्लाह एक, नबी एक और किताब एक है। (उन्हें सोचना तो चाहिए) क्या अल्लाह ने उन्हें इख़्तेलाफ़ और आपसी मन-मुटाव का हुक्म दिया था और क्या यह लोग ऐसे इख़्तेलाफ़ करके उसका हुक्म बजा लाते हैं जबकि उसने तो ख़ुद ही इख़्तेलाफ़ से रोका है और यह इख़्तेलाफ़ करके जानबूझ कर उसकी नाफ़रमानी करना चाहते हैं।''[12]

''ज़रा ग़ौर करो! जब इनके अलग-अलग ग्रुप एक जगह, सोच एक जैसी और दिल मिले हुए थे, इनके हाथ एक-दूसरे को सहारा देते थे, तलवारें एक-दूसरे की मदद के लिए निकलती थीं, इनकी बसीरतें तेज़ और इरादे एक थे, तो उस वक़्त इनके क्या हालात थे! क्या यह दुनिया के एक बहुत बड़े हिस्से पर हुकूमत नहीं करते थे और क्या दुनिया वालों पर इनकी हुकूमत नहीं थी ?[13]

''बेशक! ख़ुदा ने अगलों और पिछलों में से किसी को अलग-अलग होने और बिखर जाने पर कोई भलाई नहीं दी।''[14]

इमाम अली[अ०] की इन बातों को सामने रखा जाए तो युनिटी वीक मनाना इमाम अली[अ०] की एक बड़ी चाहत को पूरा करना है।

लेकिन यह युनिटी क्या है और कैसे इसे फैलाया जाए ?

युनिटी... यानी अलग-अलग नज़रियों और बातों का मुस्कुरा कर सामना करना और खुले दिल के साथ अदब-तहज़ीब के अंदर रहते हुए उनका जवाब देना।

युनिटी... यानी अलग-अलग स्कूल ऑफ़ थॉट्स की दलीलों से घबराए बिना उनके नज़रियों और उनकी किताबों को भी पढ़ना और उनके बारे में सोचना।

युनिटी... यानी अलग-अलग नज़रियों और अलग-अलग सोच रखने वाले लोगों की इज़्ज़त का ख़याल रखना।

युनिटी... यानी इस्लामी समाज में सबसे ज़्यादा और दूसरे समाजों में भी एक-दूसरे के साथ अमन-शन्ति के साथ ज़िन्दगी बिताना।

युनिटी... यानी अपने अलावा सबको काफ़िर साबित करने के लिए ऐड़ी-चोटी का ज़ोर लगाने की कोशिश को छोड़ देना।

युनिटी... यानी एक-दूसरे की मुक़द्दस (पवित्र) निशानियों और मुक़द्दस हस्तियों को बुरा-भला कहने से बचना।

युनिटी... यानी सभी मुसलमान फ़िरक़ों और सभी धर्मों के बीच खुले दिल के साथ बातचीत और डायलॉग के रास्ते को खुला रखना।

युनिटी... यानी मतभेद भरी बातों को इशू बनाए बिना उन चीज़ों पर एक-दूसरे के साथ क़दम बढ़ाना जो हमारे बीच एक हैं।

युनिटी... यानी एक साथ खड़े होकर दुश्मन की फूट डालने वाली साज़िशों को नाकाम बनाना।

युनिटी... यानी नफ़रत, ग़ुस्सा, दुश्मनी, जलन और लड़ाई-झगड़े जैसी ख़तरनाक बीमारियों से समाज को पाक करना।

युनिटी... यानी प्यार-मोहब्बत, आपसी मेलजोल, दोस्ती और एक-दूसरे की इज़्ज़त जैसी अच्छी सिफ़तों को समाज में फैलाना।

युनिटी... यानी अपने मुख़ालिफ़ को गालियाँ देने वाली बनू उमैय्या की स्ट्रेटजी को छोड़ देना।

युनिटी... यानी अपने दीन को बचाने के लिए दूसरों की हुकूमत में रह कर भी उनको सही रास्ता दिखाने की अलवी सीरत पर अमल करना।

युनिटी... यानी अपने साथ होने वाली नाइंसाफ़ियों के बावजूद उम्मत को बद्दुआ न देने की फ़ातिमी सीरत को अपनाना।

युनिटी... यानी दुश्मन के प्रोपेगण्डों और गिरे हुए अख़्लाक़ का जवाब अच्छे और नेक अख़्लाक़ से देने की हसनी सीरत को ज़िन्दा करना।

युनिटी... यानी उम्मत के गुमराह और हटधर्म लोगों को भी ख़ुदा के नूर की तरफ़ रास्ता दिखाकर हुसैनी मिशन को आगे बढ़ाना।

1-सूरए आले इमरान/103, 2-सूरए आले इमरान/105, 3-सूरए अनआम/159, 4-सूरए अम्बिया/92, 5-सूरए रूम/23-31, 6-उसूले काफ़ी, 2/234, 7-कश्फ़ुर्रबा/78 हदीसे सानी, 8-अमाली तूसी, दस्वीं मजलिस/263, 9-बिहारुल अनवार, 74/162; किताबुल मोमिन/72; 10-उसूले काफ़ी, 2/164, 11-नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/125, 12-नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/18, 13-नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/190, 14-नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/174,

واعتصموا بحبل الله جميعا ولا تفرقوا

अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और आपस में फूट मत डालो!।
(आले इमरान/103)

ज़िन्दा इन्सानों के नाम

■ डॉ. अली शरीअती

हल मिन नासिरिन यन्सुरुनी!

इस जुमले का क्या मतलब है ?

क्या इमाम हुसैन[अ०] को पता नहीं था कि अब मेरी मदद करने वाला कोई नहीं है ?

असल में इमाम हुसैन[अ०] ने यह बात अपने बाद आने वाले इन्सानों से कही थी। यह पुकार आगे आने वालों यानी हम लोगों के लिए थी।

इमाम हुसैन[अ०] के इस सवाल से पता चलता है कि इमाम[अ०] अपने चाहने वालों से क्या उम्मीद रखते थे। यह सवाल करके इमाम ने उन तमाम लोगों को अपनी मदद के लिए पुकारा है जिनके दिलों में शहादत और शहीदों के लिए इज़्ज़त पाई जाती है।

लेकिन हम ने इमाम की इस पुकार, उनकी तरफ़ से मदद की उम्मीद और उनके मैसेज को अपनी ज़िंदगी में वह जगह नहीं दी है जो दी जाना चाहिए थी जबकि यह मैसेज हर ज़माने और हर नस्ल के शिया के लिए था।

इसके बजाए हम दुनिया को यह बताते हैं कि इमाम हुसैन[अ०] को सिर्फ़ हमारे रोने और हमारे आँसुओं की ज़रूरत है। इमाम हुसैन[अ०] इस से हटकर हम से और कुछ नहीं चाहते और न ही उनका कोई और मेसेज है। इमाम हुसैन[अ०] अब शहीद हो चुके हैं और उन्हें अज़ादारों की ज़रूरत है।

हर इन्क़ेलाब के दो एंग्लि होते हैं: एक एंग्लि ख़ून और दूसरा एंग्लि मैसेज का।

शहीद उसे कहते हैं जो हाज़िर और मौजूद हो।

शहीद उसे कहते हैं जिसे हक़ और सच्चाई के लिए दबाया जा रहा हो, जिसे वैल्यूज़ के लिए मिटाया जा रहा हो, जो अपने इश्क़ के साथ सोच-समझ कर जिहाद करके अपनी जान क़ुर्बान कर दे और ख़ून से भरी मौत का रास्ता चुने।

जो लोग अपनी ज़िंदगी किसी भी तरह बिताने के लिए ज़लील होना बर्दाश्त कर लेते हैं उनकी गिनती हिस्ट्री के ख़ामोश और नापाक मर्दों में होती है। इसके उलट कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो ख़ुशी-ख़ुशी मौत का रास्ता चुन लेते हैं।

यही वह लोग थे जो इमाम हुसैन[अ०] के साथ क़त्ल होने के लिए मैदान में आ गये थे।

सवाल यह है कि क्या यह बहादुर हस्तियाँ अभी तक ज़िन्दा हैं, जिन्होंने अपनी जानें क़ुर्बान कर दीं या वह लोग ज़िन्दा हैं जिन्होंने इमाम हुसैन[अ०] का साथ छोड़ कर अपनी जानें बचाने के लिए यज़ीद की बैअत और ज़िल्लत की ज़िन्दगी बर्दाश्त कर ली थी ?

शहादत इस दलील को नहीं मानती कि कामयाबी सिर्फ़ दुश्मन पर कन्ट्रोल पाने का नाम है। शहीद वह होता है, जो दुश्मन पर जीत न पा सकने पर भी अपनी मौत के ज़रिये कामयाब हो जाता है और अगर दुश्मन को हरा न सके, तब भी उसे दुनिया की नज़रों में ज़लील ज़रूर कर देता है। किसी भी शहीद की शहादत का सबसे बड़ा मोजिज़ा यह होता है कि वह एक पूरी नस्ल की रगों में ताज़ा ईमान दौड़ा देता है और यूँ हमेशा मौजूद और ज़िन्दा रहता है।

इमाम हुसैन[अ०] ने हमें अपनी शहादत से भी ज़्यादा बड़ी एक और सीख दी है और वह यह है कि उन्होंने हज को छोड़कर शहादत को अपने सीने से लगाया। इमाम हुसैन[अ०] ने उसी हज को छोड़ दिया था जो उनके नाना और उनके बाबा की निशानी थी।

इमाम हुसैन[अ०] ने हज इसलिए पूरा नहीं किया था क्योंकि इमाम हुसैन[अ०] सारे हाजियों और हज़रत इब्राहीम[अ०] के सभी मोमिन पैरोकारों को बता देना चाहते थे कि अगर इमाम न हो तो कोई भी मक़सद हो वह बाक़ी नहीं रहता। अगर हुसैन[अ०] न हो और यज़ीद मौजूद हो तो अल्लाह के घर के तवाफ़ की हैसियत किसी बुतों के घर के तवाफ़ से ज़्यादा कुछ नहीं है।

जिन लोगों ने आपके न होने पर भी ख़ान-ए-काबा का तवाफ़ जारी रखा, वह लोग ऐसे ही थे जैसे वह किसी महल का तवाफ़ कर रहे हों क्योंकि शहीद वह है जो मौजूद हो। शहीद वह होता है जो हक़ व बातिल के हर मैदान में जुल्म और इंसाफ़ के बीच लड़ाई में मौजूद होता है। उसके मौजूद होने का मक़सद हर इन्सान को यह मैसेज देना होता है, ''अगर तुम हक़ व बातिल की लड़ाई में मौजूद नहीं तो फिर इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि तुम कहाँ हो। अगर तुम अपने दौर में हक़ व बातिल की लड़ाई की गवाही न दो तो फिर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि तुम क्या कर रहे हो, यानी चाहे नमाज़ पढ़ो या खेलकूद में लगे रहो, एक ही बात है''।

हर इन्क़ेलाब के दो मिशन होते हैंः एक ख़ून और दूसरा मैसेज। इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों ने पहले मिशन यानी ख़ून का रास्ता चुना। इमाम हुसैन[अ०] ने शहादत का दूसरा मिशन यानी इन्सानों तक अपना मैसेज पहुँचाने का काम हज़रत ज़ैनब[स०] को सौंप दिया।

अगर ख़ून अपना मैसेज आगे आनी वाली नस्लों तक न पहुँचाए तो ज़ालिम उसे एक ख़ास वक़्त और ज़माने में बांध कर रख देंगे। अगर हज़रत ज़ैनब[स०] करबला का मैसेज आगे न बढ़ातीं तो करबला चुप रह जाती और यह मैसेज उन लोगों तक न पहुँचता जिन्हें इस मैसेज की ज़रूरत थी। इन्सानों के कान उन हस्तियों के मैसेज से बेख़बर रह जाते, जिन्होंने ख़ून की ज़बान में बात की थी।

इसी लिए हज़रत ज़ैनब[स०] की ज़िम्मेदारी बहुत भारी और मुश्किल भरी थी। हर वह आदमी जिसने हक़ को क़ुबूल करने की ज़िम्मेदारी उठाई है, वह जानता है कि एक शिया की क्या ज़िम्मेदारी है और इन्सानी आज़ादी की डिमाण्ड क्या है।

यह बात दिमाग़ में बिठा लेना चाहिए कि ''कुल्लो यौमिन आशूरा व कुल्लो अर-ज़िन करबला'' ''(हर दिन आशूरा और हर ज़मीन करबला)'' है। इसलिए अगर इन्सान ग़ायब नहीं होना चाहता और हमेशा मौजूद रहना चाहता है तो उसे दो रास्तों में से एक को चुनना पड़ेगाः

ख़ून का... या मैसेज पहुँचाने का

हुसैनियत का... या ज़ैनबियत का

इमाम हुसैन[अ०] की तरह मरने का या हज़रत ज़ैनब[स०] की तरह ज़िन्दा रहने का

जो मर गये उन्होंने हुसैनी रोल निभाया;

जो ज़िन्दा हैं उन्हें ज़ैनबी रोल निभाना चाहिए;

जो न हुसैनी रोल निभाएं और न ज़ैनबी, ऐसे सब लोग यज़ीदी हैं।

शरई अहकाम

सवालः कालेज या युनिवर्सिटी क्लास-रूम में लड़की और लड़के का एक साथ बैठना कैसा है ?

जवाबः शरई हदों का ध्यान रखते हुए कोई हरज नहीं है।

सवालः ठीक से पर्दा न करने वाली मुसलमान औरत की तरफ़ देखने या उस से बात करने का क्या हुक्म है ?

जवाबः अगर शहवत की निगाह पड़ने या हराम में पड़ने का डर हो तो जायज़ नहीं है।

सवालः मैं एक बालिग़ लड़की हूँ। मेरी माँ ने एक मर्द से शादी कर ली है और उनका बालिग़ बेटा भी है ? क्या वह दोनों मेरे लिए महरम हैं ?

जवाबः आपका बाप आपके लिए महरम है लेकिन उसका बेटा नामहरम है।

सवालः क्या औरत अपने नक़ली बाल नामहरम को दिखा सकती है ?

जवाबः अगर ज़ीनत में गिना जाता हो तो नक़ली बालों का छुपाना भी ज़रूरी है।

सवालः क्या औरतों के लिए ड्राइविंग करना जायज़ है ?

जवाबः अगर किसी हराम काम की वजह न बने तो जायज़ है।

सवालः मेरी बहन इतनी ऊँची आवाज़ से नमाज़ पढ़ती है कि उसकी आवाज़ बराबर के कमरे वाला भी सुन सकता है। क्या लड़कियों का इस तरह से नमाज़ पढ़ना सही है ?

जवाबः एहतियाते वाजिब की बिना पर औरतों को ज़ोहर और अस्र की नमाज़ धीमे पढ़ना ज़रूरी है, जबकि बाक़ी नमाज़ों में उन्हें छूट है चाहे ऊँची आवाज़ से पढ़ें या आहिस्ता। लेकिन अगर नामहरम उसकी आवाज़ सुन रहा हो और वह इस तरह पढ़ रही हो कि नामहरम को अपनी आवाज़ को सुनाना हराम है (जैसे नाज़ुक आवाज़ में पढ़ना) तो आहिस्ता पढ़े और जानबूझ कर ऊँची आवाज़ से पढ़ेगी तो एहतियाते वाजिब की बिना पर उसकी नमाज़ बातिल है।

सवालः क्या दुआ लिखने वालों के पास जाना सही नहीं है ?सहर व जादू के बारे में आपका क्या हुक्म है ?

जवाबः अगर ऐसी दुआएं लिखें जो अहलेबैत[अ०] से बयान हुई हैं तो कोई हरज नहीं है लेकिन सहर व जादू जायज़ नहीं है।

सवालः अगर हमारे पड़ोसी के पेड़ की टहनी हमारे घर में झुकी हुई हो तो क्या हमारे लिए उसका फल खाना जायज़ है ?

जवाबः अगर उनकी इजाज़त हो तो खा सकते हैं।

सवालः अगर किसी की गर्दन पर दूसरों का हक़ (पैसा या कोई और चीज़) बाक़ी हो तो उसका क्या हुक्म है ?

जवाबः जिनके हक़ इन्सान के ऊपर हैं अगर वह उन्हें पहचानता है तो उनका माल या जो कुछ भी उसके ज़िम्मे हो, उसका अदा करना वाजिब है और अगर उन्हें नहीं पहचानता या उन तक उसकी पहुँच न हो तो उनकी तरफ़ से सदक़ा देना होगा।

सवालः क्या औरतों पर नामहरम से अपने पैरों को छुपाना वाजिब है ?

जवाबः पैरों का नामहरम से छुपाना वाजिब है।

सवालः बालों में तेल लगाने का क्या हुक्म है ?

जवाबः कोई हरज नहीं है लेकिन अगर उसका लगाना वुज़ू के लिए रुकावट हो तो मसह के वक़्त उसका हटाना ज़रूरी है।

सवालः क्या सिला-ए-रहम वाजिब है ? अगर सिला-ए-रहम ग़ीबत या किसी दूसरे हराम की वजह बन रहा हो तो उसका क्या हुक्म है ?

जवाबः सिला-ए-रहम वाजिब है और रिश्तों को तोड़ना हराम है। सिला-ए-रहम रिश्तेदारों के साथ नेकी और एहसान करने का नाम है, इसके लिए ज़रूरी नहीं है कि उनके यहाँ जाकर या उनके प्रोग्रामों में शिकरत करके ही यह काम किया जाए और अगर शिरकत गुनाह की वजह बन रही हो तो जायज़ भी नहीं है।

सवालः अगर कोई मुझ से बात करना या मिलना नहीं चाहता हो तो क्या फिर भी मेरे लिए उसके साथ सिला-ए-रहम करना वाजिब है ? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं उसे उसके हाल पर छोड़ दूँ ?

जवाबः आप उस से अपना रिश्ता मत तोड़िए। मुलाक़ात हो तो उसे सलाम कीजिए, उसका हाल पूछिये, अगर बीमार हो जाए तो उसे देखने जाइए और अगर उसे किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो उसकी मदद कीजिए। ऐसे इन्सान से सिला-ए- रहम के लिए इतना ही काफ़ी है।

सवालः अगर माँ अपने बेटे से कहे कि जाओ अपनी बीवी को तलाक़ दे दो वरना तुम्हें आक़ कर दूँगी, चूँकि उसकी बहू से नहीं बनती है तो क्या इस मामले में माँ की बात मानना वाजिब है ?

जवाबः इस मामले में माँ की बात मानना वाजिब नहीं है और माँ का यह कहना कि तुम्हें आक़ कर दूँगी सही नहीं है, लेकिन इतना ज़रूर है कि बेटा अपनी माँ से ज़बान नहीं लड़ा सकता और सख़्ती से बात नहीं कर सकता है।

सवालः क्या टी. वी. चैनल्स और फ़िल्में देखना जायज़ है ?

जवाबः ऐसी फ़िल्मों का देखना हराम है जिन्हें देखने से देखने वाले पर बुरा (निगेटिव) असर पड़ता हो और उसके बहकने या उसकी शहवत भड़कने का ख़तरा हो बल्कि एहतियाते वाजिब की बिना पर नंगी या अध-नंगी तस्वीरें देखने से भी बचना चाहिए।

सवालः अगर क़ज़ा नमाज़ इन्सान के ज़िम्मे हो तो क्या वह मुस्तहब नमाज़ पढ़ सकता है ?

जवाबः हाँ! पढ़ सकता है लेकिन वाजिब नमाज़ की क़ज़ा में इतनी देर न करे कि उसे लापरवाही कहा जाए।

सवालः नॉन-इस्लामी मुल्कों की चाकलेट और इस जैसी दूसरी चीज़ें खाने का क्या हुक्म है ?

जवाबः अगर नजिस होने का यक़ीन नहीं है तो कोई हरज नहीं है।

सवालः ख़ून लगे हुए अण्डे खाने का क्या हुक्म है ?

जवाबः ख़ून निकालने के बाद बाक़ी अण्डा खाया जा सकता है।

Subscription Form

हां, मैं, नीचे लिखी स्कीम के तहत **मरयम** की सब्सक्राइबर बनना चाहती/चाहता हूं।

S.No.:...............

निशान	साल	इश्यूज़	सालाना कवर कीमत	आप दें
☐	1 Year	12	360	360
☐	2 Year	24	720	700
☐	3 Year	36	1080	1000

*Name: Mr./Mrs./Miss ________ Date of birth: Day ____ Month ____ Year ____

*Father/Husband'sName: ________

Education: ________ Profession: ________

*Address: H/No: ________

Post : ________

City/Vill.: ________ Distt.: ________ State: ________ Country.: ________

Land Mark.: ________ Pin: ________ P.O.Box No.: ________

*Mobile No: ________ Phone (Res) ________

e-mail: ________

मौजूदा सब्सक्राइबर्स अपनी कस्टमर ID लिखें: ________ Date .... Signature...........................

For Office Use:

subscription from...............................to.........................Subscription ID ________ Receipt no. ....

Address: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

सब्सक्राइबर्स सुविधाएं अगले अंक से उपलब्ध होंगी. समस्त विवाद केवल लखनऊ के सक्षम न्यायालयों और फोरमों के विशिष्ट अधिकार क्षेत्र के अधीन है.

यह आर्डर फार्म भेजी जाने वाली रकम के साथ भेजें।

*नियम व शर्तें लागू।

मैग्ज़ीन नार्मल डाक से भेजी जाती है। रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए Rs. 240 और देना होंगें।

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 email: maryammonthly@gmail.com

इमाम हसन असकरी अ०:

मोमिन और शिया की 5 निशानियां हैं:

1- 51 रकअत नमाज़

2- ज़ियारते अबरईन

3- सीधे हाथ में अंगूठी

4- ख़ाक पर सजदा

5- बुलंद आवाज़ से बिस्मिल्लाह

RNI NO. UPHIN/2012/43577

2 OCTOBER

Gandhi JAYANTI